पल्लवी प्रकाशन

सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल

Collection of Maithili Stories

जगदीश प्रसाद मण्डल

सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल
पल्लवी प्रकाशन

सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल

सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SEHANTA SEHANTE RAHI GEL
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN : 978-93-93135-38-4
दाम : 250/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2023

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन : डॉ. उमेश मण्डल
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

अनुक्रम

निरन्तर

जीवनमे निरन्तरता पौने जीवनक आनन्द भेटिये जाइ छै, भलेँ ओकरा आनन्दित जीवन कहियौ वा नइ कहियौ मुदा ओ आनन्दित रहिते अछि, बिना दुनियाँक परवाह केने। काल्हियेसँ पत्नीक संग कनी फुल्ला-फुल्ली भऽ गेल अछि। फुल्ला-फुल्लीक कारण अछि, परसुका कुमरमक नौत-हकार सासुरसँ आएल अछि। अप्पन सासुर भेल, पत्नीक तँ माइये-बापक घर-दुआर बुझियौन आकि अप्पन नैहर। ओना, पत्नी सालमे दू बेर, एकबेर माएसँ भेँट करैक नामपर नैहर जाइ छैथ आ दोसर बेर बापक नामपर जाइ छैथ। कहिया घुमती आकि नइ घुमती तेकर कहा-बधी नइ करै छी। एकर माने पुरुखपना नइ बुझब। एकर माने ई भेल जे अप्पन अधिकार ने अपना घरमे अछि, मुदा माता-पिताक घरक अधिकारी तँ अपने नइ ने भऽ सकै छिऐ, तैठाम घुमतीक गारंटी अपने केना करा सकै छी, तँए मुँह चुप्पे रखै छी। काल्हि पत्नी उत्साहित होइत लगमे आबि बजली-

“दुनू बेकतीकेँ नौत-हकार आएल अछि। लऽ दऽ कऽ तँ एकटा गहना अछि मोहरमाला, तेकरो अहाँ बन्हकी लगा नेने छी, बिनु गहने देखि नैहरक लोक दुसत नइ।”

पत्नीक विचार अपना मनमे जँचबो कएल आ नहियोँ जँचल। कहब जे लोककेँ एकटा होइ छै, माने ‘जँचल’ वा ‘नइ जँचल’, तोरा किए दूटा भऽ जाइ छौ? तोरो विचार भाय नइ काटै छिअह, मुदा हमरो

विचारक मानि देबह की नहि? अपना समाजमे, परिवारसँ लऽ कऽ दसगरदा स्थान धरि, जेतेक प्रेमसँ वैवाहिक पद्धति बनल अछि, ओतेक कोनो देवी-देवताक स्थानसँ लऽ कऽ परिवारक आन उत्सव तकमे नइ अछि। माने ई भेल जे, मानि लिअ अहाँ सभसँ पैघ देवता वा भगवान 'महादेव बाबा'केँ बुझै छिऐन, मुदा ओइ स्थानपर गेला पछाइत नचारी छोड़ि आरो किछु कहै छिऐन। तहिना आनो-आन स्थानो आ अपनो परिवारक दोसर-तेसर काज सेहो अछि। एहेन दोसर काज तँ नहियेँ अछि जे बिआहक प्रियगर वातावरण तैयार करैए। माने भेल जे जीवनक जे साहित्य-संस्कृतिक विधान अछि, तइ अनुकूल बाल सोहरसँ लऽ कऽ विदाइ-सोहर धरि अछि। माने जीवनक मूल केन्द्रबिन्दु विवाह छी। खाएर ऐ सभसँ अपना सभकेँ कोन मतलब अछि, अपना मतलब एतबे ने अछि जेतेक मतलब दू बीघा जमीनबला किसानकेँ छैन।

प्रश्न उठैए जे जखन दू समाजक बीच बेटा-बेटीक लेन-देन होइए, तैठाम बिआहक बेवहारिक पक्ष एहेन किए अछि जे सदिकाल आन समाज माने बेटा-पक्ष, दोसर पक्ष माने बेटी पक्षकेँ हेय दृष्टिसँ देखबो करै छैथ आ हेयो मानिते छैथ। जखनसँ दोसर समाज माने बरियाती बनि अपना समाजमे दरबज्जापर अबै छैथ, तखनसँ बेटी पक्षक छाती धक-धक करैत डोलए लगै छैन जे कखन बेइज्जत भऽ जाएब तेकर कोनो ठीक नहि। की यएह छी मानवीय दृष्टि? एक दिस मानवीय सम्बन्ध, माने मनुक्खक जोड़ प्रेमसँ लगबै छी आ दोसर दिस विषवमन नइ करै छी सेहो केना नइ कहल जाएत। खाएर एकरा छोड़ू।

पत्नीक विचार सुनि चुप्पे-चाप, माने पत्नीकेँ बिनु कहनहि, बन्हकीबला ऐठाम गेलौं। जाइते ओ सूचना देलैन जे छह मास भऽ गेल, आब गहना तमादी भऽ जाएत। बहुत सूदि भऽ गेल अछि।

जहिना बनिया कहलैन तहिना अपनो ओकरा हँसीमे लैत कहलयैन-

“ई रोग की कोनो आइये अहाँ सभमे भेल अछि आकि पुस्तैनी अछि। केते हिसाब अछि, सएह बुझए एलौं हेन।”

मनकेँ मना लेलौं जे सम्बन्धमे ऐसँ बेसी तीखपन नहियेँ नीक। बनिया महाजन ऐठामसँ घुमला पछाइत, चुल्हिपर राखल कोनो बरतनक पानिमे जहिना निच्चाँसँ आगिक ताव देला पछाइत तरंग उठैए तहिना, मनमे उठए लगल। जैठाम हमरा सन किसान परिवारक एहेन स्थिति अछि, जे कृषि काजसँ जुड़ल रहनौं, आजुक ऐ मशीनी युगमे माने एकैसमी सदीक वैज्ञानिक युगमे, की एकोटा ओहन मशीन किसानक हाथ एलैन अछि। हो-हा मे कियो दमकल कीनलैन तँ बोरिंगक पाइपे फुटि गेल रहैए आ केतौ इंजन-बोरिंगमे लगल रहैए तँ बिजलीए बेमाक रहै छै। यएह तँ छी छोट किसानक जिनगी। तैठाम जँ हमरा सन परिवारमे मोहरमाला सन गहनाक लौल महिलाजगतमे अछि तँ ओ ओकाइतसँ बेसी नइ भेल तँ की भेल। हर मनुक्खकेँ अपन ओकातिक सीमाक जानकारी राखक चाही। भाय, जिनगी ठट्ठा नइ ने छी जे सुतब खढ़पर आ सपना देखब नअ लाखक..!

भीतरे-भीतर पत्नीपर मन तरंगि गेल, मनमे भेल जे किए ने ‘मोहरमाला’क दाम लगा बेचबेक गप-सप्प कऽ लेलौं। पत्नीकेँ टिटकारि देबैन जे ऐसँ नीक नबका मोडलमे दोसर गहना देब। स्त्रीगणोकेँ कि ठकब असाध काज थोड़े छी। भेल तँ साए रूपैआक साड़ीकेँ पान साए दाम कहि दियौन ओ तिरपित भऽ जेती। तहिना दोसर दिस पान साए रूपैआक साड़ीकेँ साए रूपैआ कहि दियौन, भऽ गेल दुनू परानीमे फुल्लम-फुल्ला। ओ किए अहाँक दशा वा परिवारक दशा देखती, महिलाकेँ पुरुखक बराबरीक अधिकार हौ, नीक बात, मुदा तइसँ पहिने परिवारकेँ देखैक दृष्टिकोण आ एक ढंगसँ चलैक कर्तव्य सेहो अछि किने। खाएर दुनियाँदारीक बात छोड़ू, जखन

अपना घरमे फुल्ला-फुल्ली भेल अछि तखन अनका घरक बात सुनैले जे निरलज जकाँ चकभौर मारब से बेबकूफपने ने हएत। मनमे जेना पाँतीक विराम अबैए तहिना आएल।

पत्नीक संग फुल्ला-फुल्लीक विचार मनमे दौड़-बरहा करए लगल। दौड़ैत-दौड़ैत मन पहुँच गेल राजा भरथरीपर। अपना केतबो दशा अखन तक भेल अछि मुदा भरथरी जकाँ पत्नीक मनसँ ओतेक बिमुख तँ नहियेँ ने भेल छी जे घर छोड़ि पड़ा जाएब आ पेटक खातिर पिंगले ऐठाम जा कऽ भीख मांगब। जखन पिंगलाकेँ तियागि देलौं तखन दोहरा कऽ ओकर मुँह किए देखब। महाजन ऐठामसँ हेराइत-भोथियाइत घरपर पहुँचलौं।

अपना ऐठाम दू रंगक कौआ होइए। एकटा होइए कागकौआ आ दोसर होइए कारकौआ। कागकौआक बोलकेँ लोक शुभ मानै छैथ आ कारकौआक बोलकेँ अशुभ। कागकौआ जकाँ पत्नी आगुएसँ टाँहि मारि बजली-

"महाजन ऐठामक काज भेल की?"

एकाएक मनमे उठल जे बजलौं तँ केतौ नहि, मुदा पत्नी केना बुझि गेली? मुदा लगले अपने मन कहलक, भरिसक गहनाक जे चर्च केने छेली सएह हीयमे गड़ि गेल छैन। अजेगर साँप जकाँ गेरुली मारि बजलौं-

"ओही काजमे ने लगल छी।"

संजोग बनल, बिच्चेमे पत्नीकेँ कोनो बिसरल काज मोन पड़लैन। हमरा मुहल्लत दैत आगू बढ़ैत बजली-

"अखन छुट्टी नइ अछि तँए बेसी गप नइ करब। पहिने काज केने अबै छी तखन आगूक गप करब।"

अनका जकाँ अपना नइ भेल, किए तँ आनगोटे पत्नीकेँ कहै

छथिन पहिने गप कऽ लिअ, पछाइत काज बुझल जेतइ। मुदा अपना विचारमे से नइ अछि, अपने काजकेँ जीवनक गति-विधि बुझै छी, तँए काज छोड़ब भेल जीवन छोड़ब। पत्नीकेँ काज दिस सुमुख होइते मनमे राग आएल। राग ई आएल जे जीवनमे जँ संगी नइ रहल तँ ओ जीवन कोनो जीवन नइ भेल। मुदा पत्नीक जे नैहर जेबाक तगेदा मनमे छल ओ दोसर दिस भकमुड़ि गेल। भकमुड़ि ई गेल जे दुरागमनक पछाइत, अखन बिआह-दुरागमन संगे होइए। तइसँ एत्ते तँ लाभ भइये रहल अछि जे पहिलुका जकाँ आब गाए-महींसिक पोसियाँक फरिछौठ जकाँ आब नइ होइए। पहिने दुरागमनसँ पूर्वे नैहरेमे धिया-पुता होइ छल। आब तँ समाजो आ अपन माइयो-बाप दुनियाँ दिस धकेल विदा कइये दइ छैथ जे दुनियाँ कनियेँटा थोड़े अछि जे घुरि-घुरि एकटा मालाकेँ एक साए आठ बेर जप करैत रहू। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी, करैत चलू, देखैत चलू, छोड़ैत चलू आ आगू बढ़ैत चलू।

मन तेते घोर-मट्ठा भऽ गेल जे की नीक की अधलाह से बुझैक विवेके खतम भऽ गेल। भाय, 'समाप्त' आ खतमकेँ एक नइ बुझब। 'समाप्त'क माने 'विराम' होइए आ 'खतम'क माने 'मृत्यु' सेहो होइए।

अपना मनमे से नइ भेल। ओना, आँखि तँ झलफलेबे कएल मुदा विवेक फरीच छल। विचार देलक जे अपना समाजमे अदौसँ शिक्षाक एहेन पद्धति रहल अछि जे बिना मूल्यक, माने बिनु दैछना लेने एक-दोसरक सवालकेँ उत्तरो दइ छैथ आ जँ काजक दौड़ रहल तँ काजक कला (हुनर) सेहो दइ छैथ। किसानी जीवनक जे दुनियाँ रहल अछि ओ पूर्ण जिनगीक रहल अछि। माने किसानीक सभ क्रियामे दानक कोनो मूल्य नहि रहल अछि। माने भेल जे खेतीक कोनो काजक प्रक्रिया होउ आकि परिवारेक क्रिया, माने घर बनाएबसँ बच्चाकेँ पढ़ाएब-लिखाएब, बिआह-दुरागमन कराएब इत्यादि धरिक, राय-विचारक दानकेँ कोनो मूल्य नहि दिअ पड़ै छल, मुदा आजुक

परिवेश एहेन भइये गेल अछि जे ओकर मूल्य माने कीमत दिअ पड़ैए। चिड़ै-चुनमुनी जहिना अपन बीतोसँ छोट पेट ले भरि दिन तवाह भऽ उड़ैत रहैए तहिना भऽ गेल अछि।

आने जकाँ अपनो मनमे दुनियाँक प्रति, माने परिवारसँ समाज धरि, राग-विराग उठए लगल। जहिना धरतीपर एकोअना लोक एहेन नइ हेता जे पत्नीसँ झगड़ा करिकऽ भलेँ घरसँ भागल नइ हेता मुदा कमसँ कम खेनाइ वा जलखै एक्को साँझ नइ बाड़ने हेता। विराग भेला पछातियो तँ भरथरीए ने पिंगलाकेँ अपन दुखरा सुनबैत रागियो बनिते छैथ। मनमे अपने उठल जे गामोमे तँ ओहनो लोक छथिये जे हँसैत-खेलैत दुनियाँक संग चलै छैथ। मनमे जेना बिढ़नी कटला पछाइत उड़ी-बीड़ी उठैए तहिना उठि रहल छल। तैसंग मने-मन ईहो हुअए जे अप्पन घरक बात लोककेँ केना कहबै। सभ बुझिते छी जे अपन हारल आ बहुक मारल लोक अनका लग नइ बजैए। कोनो विचार भाँजपर चढ़बे ने करए। जेमहर देखी तेहमर कुभाँजे भऽ जाए।

ताधैर मन रविकान्त काकापर चलि गेल। रविकान्त काकापर नजैर पहुँचते जेना मनमे थोड़ेक तुष्टि भेल। तुष्टि भेल हुनकर जीवन देखिकऽ। आजुक परिवेशक अनुकूल ओ अप्पन जीवन धारण केने केना सफल शिकारी जकाँ जीब रहला अछि। शिकार करैक प्रथा अपना ऐठाम सभ दिनसँ रहल अछि, मुदा से अखन नहि, अखन बस एतबे जे के कोन तरहक शिकारी बनिकऽ केहेन शिकार करै छैथ।

गाममे रविकान्त काका ओहन लोक छैथ जे लाखो लोकक बीच अप्पन जीवनक परिचय देने छैथ। ओ निर्विवाद रूपेँ मानि रहला अछि जे जातीय उन्माद लोकक मनकेँ तेना मोथि देने अछि जे नजैर बन्हाकऽ एक सीमामे केन्द्रित भऽ गेल छइ। एकर जीवन्त उदाहरण आँखिक सोझमे अछि जे जातीय दृष्टिसँ समाजक ओहन लोक जे निच्चाँसँ अबै छैथ, ओ जँ कला वा विज्ञान वा कोनो पैघ ज्ञान अप्पन

कर्मसँ अर्जित करै छैथ, तिनको आगूक लोक माने ऐगला जाइतिक सीढ़ी, निकृष्ट नजैरसँ नइ देखै छैथ, सेहो केना नइ कहल जाएत। खाएर जे अछि ओ सबहक सोझेमे अछि, तइसँ अपने आकि रविकान्ते काकाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब अछि अप्पन जीवन आ अप्पन कर्तव्यसँ।

रविकान्त कक्काक परिवार थोड़ेक नमहर छैन। माने पाँचक श्रेणीसँ निच्चाँक नहि छैन, दसक श्रेणीसँ ऊपर छैन। मुदा, की विशेषता हुनकामे छैन जे सभसँ जुड़ल जीवन छैन। अखन एतबे।

चौदह गोरेक परिवारक बीच रविकान्त काका किसानी जीवनसँ जुड़ल रहितो अप्पन जीवन-यापन ओइ रूपमे केने छैथ, जइ रूपकेँ कहल जाइए जे 'हम सबमे, सब हममे'। मन मानि गेल जे रविकान्ते काका टा अप्पन बेथासँ मुक्ति दिया सकै छैथ। विदा भेलौं। पहिनेसँ रविकान्त काका चिन्ह कऽ बैसल छला आकि आगूमे पड़ला पछाइत चिन्हलैन, से तँ ओ जानैथ मुदा निशाएल लोक जकाँ देखिते बजला-

"बालगोविन्द, अहीं सभक देश-दुनियाँ छी, जेना राखी।"

रविकान्त कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। मुदा जहिना लोक लग, लोक अपन लाज बँचबैक कोशिश करैए, तहिना अप्पन बीच-बचाव करैत बजलौं-

"काका, ई अहाँ सन भेल जे हम्मर प्रणाम करब पछुआएले अछि आ अहाँ की-कहाँ कहै छी।"

अप्पन विचारकेँ सम्हारैत रविकान्त काका बजला-

"की कहाँ, कहाँ कहलियह। तोहर रंग-रूप देखि मुहसँ निकैल गेल। एकर मद्दी नइ दहक।"

मनमे भेल, मुहसँ जे विचार निकैल गेल ओ वाण स्वरूप ने आगू बढ़त आकि मद्दी नइ दऽ ओकरा गरभेमे नाश कऽ देबइ? मुदा बजलौं

किछु ने। बजलौं एतबे-

“रंग-रूप देखि देबहरिया सभ चिन्हैए, अहाँ केना चीन्ह गेलौं?”

हमर बात सुनि रविकान्त काका ठहाका मारिकऽ तँ नहि मुदा मुस्कुरीसँ आगू बढ़ि, हँसैत बजला-

“देखबहक जे कोनो मूर्ति हुअए। ओ चाहे माटिक मूर्ति हुअए कि पाथरक आकि कागजपर छापल हुअए कि भीतपर पाड़ल हुअए, ओकर रंग-रूप देखि अप्पन मन ओहने खुशी वा दुखी होइए, जेहेन जीवन रहैए।”

रविकान्त कक्काक विचार सुनि अपन मन धकचुकाए लगल। तँए कहलयैन- “काका, नीक जकाँ नइ बुझलौं?”

अप्पन हारि देखि आकि समाजक चलैन देखि, समाजक बात-चीतक चलैनमे एहेन अछिए जे झूठो-फूस जोड़ि लोक अप्पन जानकारीक परिचय दइते अछि, तइ अनुकूल कहलौं अछि। हम्मर पैछला जीवन रविकान्त काका आंकि नेने छैथ। समाजक बीच शिकारी वएह सभ ने भेला जे जीवनक हर क्षेत्रक एक-एक पहलूकेँ आँकि अप्पन शिकारक वन निर्मित कए, शिकारी बनि जीवन गुदस करै छैथ। अप्पन आँकक अनुकूल रविकान्त काका सेहो आँकि नेने छैथ जे बालगोविन्दक जीवनमे निरन्तरता नइ अछि। जँ निरन्तरता रहैत तँ एक दृष्टिक अनुकूल एक्के स्थानपर ठाढ़ भऽ एकरंग समाज वा दुनियाँकेँ देखैत, मुदा से तँ नहि अछि। पुरुख-नारीक बीच खाली प्रकृतिके दूरी नइ अछि बल्कि जीवनक असंख्य पहलूक दूरी सेहो अछि। रविकान्त काका बजला-

“बालगोविन्द, तोरा हम की कहबह, तूँ ते अपने सभ किछु जनै छह।”

रविकान्त कक्काक विचार सुनि मनमे तुष्टि एबे कएल, किए तँ

हर मनुक्खक एहेन मरल संस्कार बनियेँ गेल अछि आ बनितो अछिए जे सभ किछु जनिते छी, सभकिछु हमरा बुझले अछि। बुझले टा नहि अछि, अनकासँ बेसी बुझै छी। भलेँ चाइन परक चानन देखि अरबा चाउरक पीठारसँ सिरा आगू किए ने छछाड़ल देखि पड़ए..! बिनु विचारले बजा गेल-

"काका, जँ अपने सभ किछु जनितौं तँ घरसँ बहार धरि, माने पत्नी लगसँ लऽ कऽ बनिया-महाजन तक, अहिना दुतकार पेबितौं।"

रविकान्त काका बजला-

"बालगोविन्द, अनकर बात नइ कहै छिअ जे झूठ-फूस हएत। तोरा परिवारक बीच जीवनक निरन्तरता नइ छह। अप्पन सम्बन्ध बुद्धिनाथ भायसँ भेँट भेला पछाइत केना निरन्तर अखन तक चलि रहल अछि, मात्र चलिये नहि रहल अछि, बढ़ितो चलि रहल अछि आ तोहर?"

रविकान्त कक्काक विचार सुनि मनमे ठहकल। ठहकल ई जे खिस्सा-पिहानीक जँ जीवनधार चलैए तँ जीवनक किछु-ने-किछु एहेन अमूल्य रत्न धारामे भेटिते अछि जे अपनो जीवनक रत्न बनैए। अपने मनमे शंका ईहो हुअए जे जहिना घटिया लोक कहियौ आकि असज्जन बेकती, ओकरा संग मित्रता जोड़ैये काल मनमे शंका समा जाइ छै जे ई मित्रता केतेक दिन चलत आ कोन रूपेँ चलत। तँए राम-रामक लूट सम्भव भइये जाइए। माने करवन तक रहत आ करवन जाएत, तेकर कोनो ठेकान नहि। मुदा सज्जन लोकक मित्रता विश्वास भरल पात्रक होइए। ओ ई होइए जे दुनियाँक हर जीव-जन्तुमे एहेन गुण होइए जे किछु दइते अछि, लइ किछु ने अछि।

ओना, महाकवि विद्यापति सेहो लोकेकेँ देखिये कऽ कहने छैथ- 'सज्जन जनसँ नेह कठिन थिक'। मुदा नेह करबे कठिन छी, तेतबे

नहि, नेह भेला पछाइत निमाहबो कठिन थिक। जेकरामे जेहेन निरन्तरता रहत ओ तेहेन रूपमे चलैए। जँ से निमाहैक शक्ति बना सकी तँ निश्चये राम भक्त हनुमान जकाँ भइये जाएब। 'लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल'। सज्जन सिर्फ शब्द नहि छी, जेकर माने बुझै छिऐ सोझ-सपाट लोक। सज्जनपन जीवन छी। ओ जीवनधारमे ओहन बेकती-बेकतीक अपन-अपन धारा सेहो प्रवाहित होइते अछि। मुदा ओइ प्रवाहकेँ जखन सामाजिक धारामे सम्मिलित करैत प्रवाहित बनबए चाहब, तखन टकराहट होइते अछि जे स्वभाविक सेहो अछि। पहाड़क ऊपरसँ प्रवाहित होइत झरनाक पानि जखन दोसर पहाड़क झरनाक पानिमे समाहित हुअ लगैए तखन अप्पन-अप्पन प्रवाहक गतिक अनुकूल समावेश करिते अछि।

अपन जीवनक विपरीत दिशामे बुद्धिनाथ भाइक नाम सुनि, अपने मन धिरकारलक। धिरकारलक ई जे किए ने बुद्धिनाथ भाइक गाथाकेँ धियान लगा अपनो जीवन दर्शन बनाबी। बजलौं-

"काका, अहाँकेँ बुद्धिनाथ भायसँ केना सम्बन्ध बनल आ अखन कोन रूपमे अछि से कनी..?"

हेराएल चीज भेटला पछाइत जहिना मनमे खुशी होइए तहिना रविकान्त कक्काक मनमे सेहो भेलैन। जहिना एक्के सुरिमे कियो एक-सँ-साए तक गनि लइए, गनि तँ जरूर लइए मुदा अंकक माने ई नइ बुझैए जे एक आ साएमे केतेक दूरी वा अन्तर अछि, तहिना एक्के सुरिमे रविकान्त काका बजला-

"बौआ, बुद्धिनाथ भाय आइ.ए.एस.क डिग्री प्राप्त कएल बेकती छैथ। जखन ओ आई.ए.एस. नहि भेल छला तइसँ पहिनहि ओ अप्पन साहित्यिक परिचय दऽ देने रहैथ।"

रविकान्त काका जहिना बजला तहिना अपनो बुझि गेलौं, मुदा

मनमे तेतेक रंगक जिज्ञासा जगि गेल जे आरो गहाराइसँ बुझैक इच्छा भेल। तँए अनेरे मुहसँ निकैल गेल- “साहित्यिक बात कनी नीक जकाँ कहियौ, काका?”

रविकान्त काका बजला-

“बुद्धिनाथ भाइक लिखल कथामे एकटा कथा पढ़ैक मौका हमरा हाइये स्कूलमे भेटल छल। हाइ स्कूलमे मैट्रिक कुलेशनमे जे कथा संग्रह पढ़ाइ होइ छेलै, तइ संग्रहमे। कथाक गढ़ैन देखि मनमे तुष्टि आएल जे एहेन कथा हमहीं कि सभ लिखि सकैए। दोसर उत्कंठा कथाक सही सोचक दिशासँ भेल। सचमुच जइ समयक कथा छी, मध्यवर्गीय जीवनक सच्चाइ छी।”

बजैत-बजैत रविकान्त काकाकेँ ओहिना भेलैन जेना दूरक सफरमे गाड़ीमे पेट्रौल सठने होइए। मुदा गाड़ीए जकाँ पाछूसँ धकियबैत बजलौं-

“काका, जहिना धोती वा कुर्ता जखन पहिरै-जोकर होइए, माने अंगक सिनेह अडेज लइए, तखन ओ फटिये जाइए, तहिना अहाँ किए बिच्चेमे..?”

ओना, रविकान्त काका फटल नहि छला, विस्मित भऽ गेल छला, हमर बात सुनि विह्वल होइत बजला-

“बौआ, बुद्धिनाथ भाइक जीवन अनमोल रहलैन अछि। बच्चेसँ जे धियान धारणाकेँ धारण केलैन आ कौलेज-जीवन तकक रिजल्ट जे रहलैन, ओ जहिना लंकामे प्रवेश करैसँ पहिने एकचलिया हनुमान समुद्र लंघन केने छला तहिना ओ एक स्तरक परीक्षाफल प्राप्त कऽ लेलैन। जे हुनका आई.ए.एस. तक पहुँचा देलकैन।”

अखन तक अपना समाजमे दू तरहक धारा प्रवाहित होइत रहल अछि। पहिल- शासन-धारा, जेकरा राजधारा सेहो कहि सकै छिऐ आ

दोसर अछि- जन-धारा, जे सामाजिक जीवनमे जन्म लइत चलैए। समाजक अधिकांश जाति राज-धारासँ सेहो सम्बन्धित रहला अछिए। कर्म विभाजित जाइतिक कर्मसँ समाज सेहो ठाढ़ अछिए। जीवनक हरक्षेत्रमे ओकर खगता छइहे। जे परिवार राज-धारासँ सम्बन्धित रहल अछि ओकर विचारेटा नहि, बेवहारोमे जन-धारासँ दूरी बनले अछि। बुद्धिनाथ भाइक परिवार उच्च जाइतिक होइतो ओइ धारासँ, माने राज-धारासँ अलग रहलैन।

पाछूसँ उधकियबैत बजलौं-

"काका, एना बीच-बीचमे गाड़ी रोकि किए दइ छिऐ। चक्कामे केतौ चोरसिलिप ने ते अछि।"

हृदय खोलि रविकान्त काका बजला-

"चोरसिलिप नइ अछि, करवनो-करवनो गाड़ीमे हब-कप ढील भऽ जाइए तँए भेकम कम बेसी भऽ जाइए।"

शुरूसँ अन्त धरिक जीवन एक स्वस्थ प्रशासक रूपमे बुद्धिनाथ भाइक रहलैन। सेवा निवृत्त भेला पछाइत, ताधैर रविकान्त काका सेहो एक जीवन टपि दोसर जीवनमे प्रवेश कऽ चुकल छला, पछाइत पुन: हुनकामे लिखब-पढ़ब जगलैन। बीचक समय व्यस्तताक कारणेँ अव्यवस्थित भइये गेल छेलैन, जइसँ जीवन अस्त-व्यस्त रहलैन। बजलौं-

"अपनेक जे सुतल विचार, हाइ स्कूलक कथा अपनेक मोने अछि, ओ पुन: केना जगल?"

रविकान्त काका बजला-

"ओना, सतासीक (1987 ई.क) बाढ़िक साल घरक चुबाठ तेते भेल जे सभ किताबकेँ दिवार खा गेल। तँए पहिलुका किछु रहल नहि। मनमे उठल जे किए ने बुद्धिनाथ भाइक ओ कथा पुन: पढ़ी। मुदा

मनक विचार मनेमे औनाइत रहल। जे निरन्तरता एलासँ अपने हाथे माने बुद्धिनाथ भाइक हाथे प्राप्त भेल। फोनपर बुद्धिनाथ भायसँ सम्बन्ध बनल। ओना, कार्यक्रममे माने साहित्यिक कार्यक्रममे केता बेर चेहरा देखि चुकल छेलिऐन, मुदा प्रणाम-पातीसँ बेसीक सम्बन्ध नहि छल।"

अपने बजा गेल-

"तेकर पछाइत की भेल?"

रविकान्त काका बजला-

"आग्रह केलिऐन जे 'अपने पैछला पीढ़ीक जीवित सम्मानित रचनाकार छी, किछु कथा हमहूँ लिखलौं, से अपने कने सुधारि दैतिऐ'। तैपर हलैसकऽ ओ कहलैन, 'पठा दिअ'।"

अपना सुनल अछिए जे एक-एक कथा वा कविता शुद्ध करैमे मासक-मास समय खिंचा जाइए, तैठाम हुनकर गति-विधि केहेन छैन, यएह सोचि बजलौं-

"केहेन सुधार केलैन?"

मुस्कुराइत रविकान्त काका बजला-

"सुधार तँ ओहने केलैन जे आइ छी।"

तही बीच दोसर महानुभाव पहुँच गेला। महानुभाव भेला ओहन बाहरी लोक जे अपनासँ कनी दूरपर अछि। माने परिवारक हिसाबे दोसर परिवारक आ समाजक हिसाबे दोसर समाजक। ओना, जँ निच्चाँ-ऊपर गज-फीतासँ नापए चाहब तँ ओकरो लंकाक हनुमान जकाँ नाङैर बढ़िते जाएत मुदा से अखन नहि।

दरबज्जापर, माने रविकान्त कक्काक दरबज्जापर जखन अभ्यागत पहुँच गेला तखन अप्पन गाम-घरक विचारक गप-सप्पकेँ विराम दिअ पड़त ने। ओना, अपना मनमे एकटा तेसरे विचार उठि

गेल। मुदा से बजलौं नहि। तेकर फल ई भेल जे अपने-अपने विचारमे तेना बोहिया गेलौं जे अभ्यागतक संग रविकान्त काकाकेँ की गप-सप्प भेलैन से सुनबे ने केलौं। अपना मनमे उठि गेल छल जे एक दिस साढ़े पाँच क्विन्टल माने मोंट-सोंट लोक छैथ, दोसर दिस पनरह-बीस किलोक नहि अछि, सेहो केना अपना मने मानब। एकरा फूसि केना कहबै जे एक दिस तल्लाक बीच तल्ला साए तल्लाक बीच लोक सुतैए आ दोसर दिस आम-कटहर पीपर-बड़क निच्चाँक घास-फूसपर नइ सुतैए, सेहो केना नइ कहबै।

तही बीच चाह आबि गेल। अप्पन-अप्पन विचारसँ आगू बढ़ि जीवनक चाहक विचार, तीन घोंट चाह पीलाक पछाइत उठए लगल।

❑

शब्द संख्या : 3025, तिथि : 21 दिसम्बर 2022

शॉर्टकट रास्ता

आइ छअ माससँ सुविचार भाय मनरोगसँ पीड़ित भऽ तरे-तर गुमसड़ि रहल छैथ, मुदा मुँह उठा केकरो लग किछु बाजि नहि रहला अछि। बजबो केना करता? सोगो तँ सोग छी जइसँ सभ किछु-ने-किछु पीड़ित अछिए। कियो पुत्र सोगसँ पीड़ित अछि, तँ कियो धनसोगसँ पीड़ित अछि। मोटा-मोटी एना बुझियौ जे एक्को पाइ लोक एहेन नइ छैथ जे पीड़ित नइ छैथ। आइ अस्पतालेमे की देखै छिऐ जे एकदिस मदपानसँ चूर डॉक्टर साहैब रोगीक इलाज करए बैसल छैथ तँ दोसर दिस भाँग-गाजाक मातल टेम्पूबला अपन रोगी लऽ पहुँचैए, तैठाम जँ रोगी लग डॉक्टर साहैबकेँ पहुँचैसँ पहिने विवाद नहि होइन, सेहो प्रकृतिक प्रतिकूले ने कहौल जाएत।

पूर्णिमाक प्रातक दिन, माने पूर्णिमा भेलाक एक दिनक पछाइत, सुविचार भाय कमलानन्द काकाकेँ अपन भातीज दिया समाद पठौलैन जे जेतेक जल्दी भऽ सकैन तेतेक जल्दी भेँट दैथ। ओना, एहेन विचार शिष्टाचारक विपरीत भेल मुदा परिस्थितिवश अनुकूलो भेल। सुविचार भाय अपन मनसोगसँ तेतेक पीड़ित भऽ गेल छैथ जे आँखिक सूत बैस गेल छैन तँए श्रवण कुमारक पिता जकाँ आन्हर भऽ गेल छैथ। ओना, समाद पठबैसँ पहिने सुविचार भाय एते सतरकी कइये नेने छेला जे सोझे भेँट करए कहबैन से केतौसँ उचित नइ हएत। तँए पुत्री सोगक चर्च सेहो भातीजसँ कऽ नेने छेला।

कमलानन्द काका सुविचार भाइक समाद सुनि गुम्म भऽ गेला।

आदमी मारफद जँ कोनो जल्दबाजीक समाद अबैए तँ ओकर महत्व आन दोसर माध्यमक समादसँ बेसी होइते अछि। किए तँ आदमीक समदियाक माने भेल संगे नेने आएब। तहूमे आजुक बदलल परिवेशमे, अखन तँ माता-पिताक श्राद्ध आ गयाक पिण्डदान मोबाइलोसँ दैछना पठा हुअ लगल अछि।

अठारह-उन्नैस बर्खक सुशीलक मुहेँ समाद सुनि कमलानन्द काका पुछलखिन-

“बौआ, नीक जेकाँ नइ बुझलौं।”

जहिना कोनो नवयुवक जे आइ.ए.एस.क संकल्पकेँ मनमे रोपि अप्पन जीवनकेँ साधना दिस मोड़ि साधक बनि साधना करैए तँ ओ निश्चये सफलताक सीढ़ी प्राप्त करिते अछि, तहिना माने ओहने नवयुवक जकाँ सुशील बाजल-

“बाबा, चाचाजी एतबे बजला जे पुत्रीक सोगसँ तेते पीड़ित भऽ गेलौं जे आगू दिस किछु सुझि नहि रहल अछि।”

सुशीलक संगे कमलानन्द काका विदा भेला।

कमलानन्द काका आ सुविचार भाय एक-दोसराक जीवनक संगी छैथ। दुनूक जन्म एक्के दिन भेल छैन। मुदा समाजक जे बेवहारिक चलैन अछि तइ अनुकूल कमलानन्द ‘काका’क रूपमे आ सुविचार ‘भाय’क रूपमे छैथ।

दस कट्ठाक करीब हटलेसँ कमलानन्द काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर सुविचार भायकेँ बैसल देखि नेने छला, मुदा मुँह बन्न ऐ दुआरे रखने रहला जे जिनका लग एलौं हेन से ने पहिने टोकता, मुदा जे टोकतैन तिनकर तँ आँखियेक सूत बैस गेल छैन तखन देखबे केना करतैन। ओना, कमलानन्द कक्काक मनमे उठि गेल छेलैन जे जैठाम एलौं से तँ घरवारीक सीमामे भेला, ओ अपन परिवारक सीमा-

सरहदक बेवहार केहेन रखता से तँ हुनकर परिचय भेलैन। तैबीच अप्पन मान-रोच राखब नेनपन भेल। अप्पन मन कमलानन्द कक्काक मानि गेल छेलैन। तैबीच धीरे-धीरे कमलानन्द काका सुविचार भायसँ लग्गा तीनियेँक दूरपर पहुँचला। जोरसँ खखास केलैन। सुविचार भाइक मन तेना भावनामे भवित भऽ गेल छेलैन जे आँखिक संग कानो सुन्न भऽ गेल रहैन। मुदा तैयो मनमे एहेन विचार तँ रहबे करैन जे कमलानन्द काका जइघड़ी ने पहुँचला अछि। समयक योगसँ मुहूर्त्त बनियेँ गेल अछि। कनी फरिक्केसँ सुविचार भाय ठुनकैत बजला-

"आब हम नइ जीब, तँए आखरिये दिन बुझू।"

सुविचार भाइक विचार कमलानन्द काकाकेँ कोनो भाँजेपर ने चढ़लैन। भाँजोपर केना चढ़ितैन, एक्के दिनक जन्म दुनू गोरेक अछि, अखन पचासो ने टपलौं हेन, तखन एहेन विचार मुहसँ निकालब सोहंतगर थोड़े भेल। प्रेमचन्द भाइक अप्पन नजैर छेलैन तँए ओ पचासक निच्चेँ, माने चालीसकेँ घपचालीस कहलैन। फेर अपने मन कमलानन्द कक्काक मानि लेलकैन जे भरिसक कोनो तेहेन सोगमे सुविचार सोगा गेल अछि जइसँ विचलित भऽ गेल अछि। जहिना कोनो ढेरबा बच्चा घरसँ बौड़ा बोन-झाड़मे पड़ि जाइए आ बौराइत-बौराइत कोनो एहेन कुठामपर चलि जाइए जैठाम मरब छोड़ि दोसर रस्ता नइ रहैए..।

जइ हिसाबसँ माने जइ मार्मिक भावसँ सुविचार भाय बाजल छला तेकर विपरीत भाव कमलानन्द कक्काक मनमे जगि गेल छैलैन। जगिते मन तमतमा गेलैन जइसँ ठोर पटपटेलैन, एहेन जे बुड़िवाण अछि जे संगे-संग रहितो एतबो ने बुझि सकल जे कुम्हारक कँचको बरतनसँ तन्नुक अपन जीवन अछि, जे कखनो हवा भरल बैलून जकाँ खुस्स-दे सटैक जाएत।

कमलानन्द काका भाव बदैल बजला- "की समय अपना

सबहक छल आ अखन की भऽ गेल अछि..!"

सुविचार भायकेँ सेहो अप्पन ओ दिन मोन पड़ि गेलैन जइ दिन बेटी बिआह अपनासँ बीस परिवारमे कराएब सोचलैन। तैसंग एकटा धारा मनमे प्रवाहित भेलैन जइमे अप्पन कर्तव्यक संग बेटीक बेटपनक बोध भेल रहैन। बोध ई भेल रहैन जे जखन पाँच बेटाक बीच एकटा बेटी अछि, ओकर पिता तँ हम ओहिना छिऐ जहिना बेटाक छिऐ। तँए बिना कोनो मथहानि केने बेटीकेँ बी.ए. पास करौलैन। बी.ए. पास करौला पछाइत डॉक्टर लड़काक संग विवाह सेहो करौलैन।

सुविचार भाइक जमाए डॉक्टरी कऽ रहला अछि। मुदा जखन सुनलैन जे जमाए एकटा ओहन लोकसँ अनेरे उलैझ गेला जे जान लइपर तुलल छैन, तखनसँ डरे सुविचार भाइक मन थरथर काँपि रहल छैन जे की सोचि बेटीकेँ पोसलौं आ दोसराक घर हँसी-खुशीसँ विदा केलौं आ आइ की देखि-सुनि रहल छी। यएह सोग सुविचार भायकेँ तरे-तरे सड़ैन करैत मरनासन्न बना देने छैन।

जीवन-वनक बीहमे सुविचार भाय तेना ओझरा गेल छैथ जे कोनो बाटे ने सुझि रहलैन अछि। मन मसोसिकऽ बजला-

"काका, ऐ जीवनसँ मृत्यु नीक।"

सुविचार भाइक विचार कमलानन्द काका विचारए लगला जे करवन कोन तरहक मृत्यु जीवनसँ नीक होइए आ कोन तरहक अधला? कियो नीकसँ अधला बनैए तँ कि ईहो फूसि थोड़े छी जे कियो अधलोसँ नीक होइते अछि। मुदा विचारकेँ बदलैत कमलानन्द काका बजला-

"दुनू नीको अछि आ अधलो तँ अछिए। कियो जीवन ले मरैए तँ कियो मरैले नइ जीबैए सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो तँ अछिए।

जीवन-मरणक गप-सप्प छोड़ह, अपन वेदनाक की कारण छह तैपर आबह।"

सुविचार भाय बजला-

"काका की कहब, बजैमे लाज होइए.! मुदा अहाँ लग नइ बाजब तँ धर्मराजक घर दोखी बनब।"

कमलानन्द काका बजला-

"अखन अलंकार छोड़ह, धर्मराज आ धर्मक विचार पछाइत करिहह, अखन बाजह जे की भेलह हेन?"

सुविचार भाय बजला-

"बड़ लीलसासँ बेटीक सेवा कए घर बसेलौं मुदा ओ घर उजैर रहल अछि..!"

सुविचार भाइक विचार कमलानन्द कक्काक मनमे मेघक बादल जकाँ उमड़लैन-घुमड़लैन। उमड़लैन ई जे सोगो तँ सोग छी, हजारो रंगक अछि मुदा सेवा कएल बेटा-बेटीक घर उजड़ैत देखि कोनो माता-पिताकेँ सोग हएब सोभाविक अछिए।

सुविचार भाइक विचार सुनि कमलानन्द कक्काक अपने मन विचार देलकैन जे किए ने बेटीक उजड़ैत दशाकेँ एक नजैर पहिने देखि-सुनि ली। बजला-

"कनी फड़िछाकऽ बाजह।"

सुविचार भाय बजला-

"काका, जमाए डॉक्टर छैथ से तँ बुझले अछि?"

कमलानन्द काका बजला-

"किए ने बुझल रहत। पिता प्रोफेसर छेलखिन, माए डॉक्टर।"

सुविचार भाय बजला- "अपना दुनू गोरेक जन्मो एक्के दिन भेल

आ अखन तक संगे-संग चलियो रहल छी, मुदा अहाँ लग अखन तक एकटा विचार, जहिना कृष्णक दरबारमे अपन गरीबीक तण्डुल सुदामा नुकौने छेलैथ, तहिना हमहूँ नुकौने रहल छी से पहिने कहि दइ छी।"

कमलानन्द कक्काक मनमे पवित्र शीतलपवन जकाँ सिहकलैन। सिहकलैन ई जे जीवनक दुनू दिस ढलान अछि, माने आगूओ दिस आ पाछुओ दिस, दुनू ढलानक बीच मनोदशाक विचार सेहो ढलकैत-फलकैत रहैए, तैठाम विचारमे संगपन अबिते अछि।

तैबीच अप्पन नुकाएल बेथाकेँ खोलैत सुविचार भाय बजला-

"काका, मनमे ओही दिन ठनकाक चोट जकाँ लागल जइ दिन सुनलौं जे जमाए समैधकेँ मारलैन.!"

ओना, कमलानन्द काकाकेँ तरी-सँ-घटी धरिक जानकारी प्रोफेसर साहैबक विषयमे छैन्हे मुदा जहिना कबीर दास कहलैन जे 'बिनु डंडी के पलड़ा तौलत है संसार', तहिना ने सभ मनुक्खकेँ अप्पन-अप्पन तराजूक दुनू पलड़ा आगूएमे छैन, अपना-अपना नजरिये तौलै जाउथ। जीवन जीवन छी, ठट्ठा नहि। जे जीवन जेतेक क्रियाशील रहत ओ जीवन ओतेक बेसी तुष्टि देत, मुदा जे जीवन परजीवी भऽ गेल, ओइ जीवनक फल एहेन भेटब अनुचित नहियेँ कहल जा सकैए। जे जीवने ओहन बनि गेल जइमे माए केतौ, बाप केतौ आ बेटा-बेटी केतौ रहत ओइमे वैचारिक केतबो प्रगाढ़ता किए ने हुअए मुदा बेवहारिक कमी रहबे करत।

रूपलाल माने सुविचार भाइक जमाए, बच्चेसँ परिवार-समाजसँ हटल रहला। जखन कि माए-बाप स्वयं समाजक प्रबुद्ध बेकती, मुदा हुनका अपनो सन्तानपर मोह-माश्चर्य नहि भेलैन जे अपन सन्तानकेँ कमसँ कम अपना स्तर तक बनाइये सकै छी। माता-पिताकेँ नीक आमदनी, बेटा हाथमे ओते पाइ दऽ दइ छेलखिन जे हाइये स्कूलसँ

रूपलालकेँ शराब पीबैक चहैट लगि गेलैन। मेडिकलक छात्र होइत-होइत मातो-पिताकेँ अखड़ए लगलैन, मुदा बेटा तँ जवान भऽ गेलैन। एहेन स्थितिमे कहुना पढ़ाइ समाप्त भेला पछाइत नोकरियोक जोगार कऽ देबै आ बिआहो-दान करा अप्पन माता-पिताक दायित्व पूरा करब। अप्पन मनक विचारमे भरल कमलानन्द काका रहबे करैथ, बजला- "दायित्व पूर्ति होइसँ पहिने प्रोफेसर साहैब ग्लानिसँ भरि गेला.!"

जहिना पैघसँ पैघ देहक रोग हुअए आकि मनक, जखन सच बात माने ओइ बिमारीक सही कारण बुझिमे अबैए, तखन रोगक पीड़ा स्वत: किछु-ने-किछु कमबे करैए।

हृदय खोलि सुविचार भाय बजला-

"काका, बेटी सुनयनाक की गति हएत.!"

ओना, कमलानन्द कक्काक मनमे अनेको प्रश्न बरखा-बूनक बुलबुला जकाँ मनमे उठबो करैन आ अपने फुटि-फुटि प्रवाहितो हुअ लगलैन। मुदा विचारकेँ समेटिते मनमे उठि गेलैन, अखन तक अपना ऐठाम जेतबो खोलिकऽ बेटाकेँ राखल गेल तेतबो बेटीकेँ नहि। जीविकोपार्जनक कोनो अधिकार बेटीक हाथमे नइ रहल, जइसँ ओकर आत्मशक्ति जगैत, मुदा जे अछि तहीमे ने सभ छी। बेटी सुनयनाक चर्च सुनि कमलानन्द कक्काक मन दहैल गेल छेलैन, जइसँ मनमे उठि गेलैन जे अखन तक जे बेटीक जीवन परिवार-समाजमे रहल ओ ओहन रहल जेना बन्हौटा गाएकेँ खाइले दियौ वा नइ दियौ मुदा दुहैकाल बड़का बाल्टीन लऽ कऽ पहुँच जाउ, सएह स्थिति बेटी-जातिक परिवार-समाजमे रहल अछि। समाजो तँ समाज छी, एक दिस जहिना नैतिक प्रवचन अकासमे गुंजायमान होइत रहैए तहिना दोसर दिस पैघ-सँ-पैघ अपराध नइ होइए सेहो केना नइ कहल जाएत। अपना ऐठाम किसानी जीवन एहेन रहल अछि जे किसान

किसानीपर आश्रित छैथ, अधिकांश ओहन किसान छैथ, जिनका किसानी करैक ओकाइत–खेतसँ साधन धरि–नइ छैन आ जे किसानी नइ करै छैथ हुनके सभ साधन छैन। ओना, बटाइ सिस्टम सेहो अछि मुदा ओहो बेढंग अछि। खाएर जे अछि, कमलानन्द काका बजला-

"सुविचार, काल्हि दिन की हएत तेकरा मनसँ भगावह। आजुक की स्थिति अछि तैपर धियान दहक।"

ओना, कमलानन्द कक्काक मनमे एहेन विचार हिलोर मारिते रहैन जे जे जीवन जेतेक शॉर्टकट रास्तासँ चलत ओ ओते जीवनसँ दूर रहत। जीवन जीबैले जहिना समुद्र पार करैक सूत्र अर्जुन आ हनुमान दुनूकेँ बुझल रहैन मुदा दुनूक दू रास्ता रहैन, तहिना जीवनक पूर्ण रास्ता आ शॉर्टकट रास्ताक बीच किछु-ने-किछु कमी-बेसी हेबे करत मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे हीय हारि सुविचार भाय बजला-

"समाज जेना पार-घाट लगाबैथ।"

❑

शब्द संख्या : 1620, तिथि : 26 दिसम्बर 2022

अपेछा टुटि गेल

अपेछा शब्दक प्रयोग अनन्त रूपमे होइए। जेना ‘सामाजिक अपेछा’, ‘जतियारे अपेछा’, ‘राजनीतिक अपेछा’, ‘साम्प्रदायिक अपेछा’, ‘धार्मिक अपेछा’ इत्यादि-इत्यादि। मुदा अपनासभक समाजमे प्राय: दू रूपमे ‘अपेछा’ शब्दक प्रयोग होइए, पहिल आशाक रूपमे आ दोसर सम्बन्धक रूपमे।

आने दिन जकाँ रघुवीर भाय दच्छिनमुहेँक रास्ता पकैड़ भोरमे टहैल रहल छला। अप्पन निश्चित स्थानपर, जैठाम तक सभदिन जाइ छैथ, पहुँच रघुवीर भाय घुमि रहल छला। किछु दूर आगू एलापर शुभकान्तसँ भेँट भेलैन। ओना, शुभकान्तक संग रघुवीर भाइक बीच बेवहारिक कोनो सम्बन्ध नहि छैन। एक गामक पढ़ल-लिखल लोक दुनू छैथ, तँए उमेरक लेहाजसँ रघुवीर भाय थोड़े आगूएसँ बजला-

“भाय, गोड़ लगै छी। बहुत दिनक पछाइत भेँट भेलौं, की हाल-चाल अछि?”

जहिना बेपारीक एजेन्ट होइए तहिना सरकारी एजेन्ट सेहो होइते अछि, तँए गप-सप्प करैक ढर्रामे दुनूक बीच, दुनूक विशेष गुणक कारणेँ, अन्तर सेहो अछिए। सामान्य भाषामे माने सामाजिक भाषामे ‘हँ-नइ’ वा ‘नीक-बेजाए’केँ बेराएब आसान होइए, मुदा एजेन्सीक भाषा तँ से नहि होइ छै। ओतए ‘हँ-नहि’केँ बेराएब कठिने नहि, महा कठिन भऽ जाइए। ..एजेन्सीक भाषामे शुभकान्त उत्तर दैत

बजला- “भगवान सभकेँ आनन्द राखैथ। अहाँ सभ गाममे रहए दैतौं तरखन ने एकठाम रहितौं आ बेसीकाल भेँट-घाँट होइत रहैत, से तँ रहए नइ देलौं। पाँच दिन सेवा निवृत्ति भेना भेल अछि, आब गामेमे रहब। यएह सभ हाल-चाल अछि।”

शुभकान्तक विचार सुनि रघुवीर भाइक मनमे उठलैन जे एक गामक धरतीपर दुनू गोरेक जन्म भेल अछि। ऐसँ बेसी कोनो सम्बन्ध अछिए नहि, तरखन बेसी गपे-सप्प की करब। रास्ता काटि आगू बढ़ए लगला कि शुभकान्त बजला-

“जहिना नब चासक लटारम्भ होइए तहिना ने नब बासो आ बासियोक संग होइते अछि।”

रघुवीर भाय बजला-

“हँ, से तँ होइते अछि।”

चारि दिनक बीच शुभकान्त घरमे रहैसँ लऽ कऽ खाइ-पीबै धरिक जोगार कऽ नेने छला। खाली उठौना दूधक भाँज पछुआएल छेलैन। जँ छपरा-सिवान दिसक नोकरीक जीवन बितौने रहितैथ, तरखन दूधोक ओते खगता नहियेँ रहितैन मुदा पूर्णिया जिलामे जीवनक पूर्ण नोकरी बितौलैन तँए दूधो-दही आ माछोक चहैट लगिये गेल छैन। माछक ओरियान तँ भऽ गेल छेलैन जे माछ पहुँचा देतैन। मुदा दूधक जोगार नइ भेल छेलैन। एतबे भाँज लगल छेलैन जे गाममे आठेटा किसान एहेन छैथ जे दूध बेचै छैथ, जइमे रघुवीर भाय सेहो छैथ।

रघुवीर भाय बी.ए. पास केलाक पछाइत गामेमे रहि किसानी जीवनकेँ अंगीकार केलैन। मध्यम कोटिक परिवार छैन, माने पाँच बीघा जमीनक जोतबला परिवार। ओना, कोनो तरहक जीवन एहेन नइ होइए जे ब्रह्मा जकाँ निर्माताक नइ होइए, सभ होइते अछि, मुदा किसानी जीवन तँ आरो बेसी सघन रूपमे अछि। खेतक अन्नसँ लऽ

कऽ बेरव-बुनियादि माने गाछ-बिरीछ आ माल-जालक संग मनुक्खक निर्माण सेहो किसानी जीवनमे अछिए। ऐठाम ई नइ बुझब जे बाप बेटाकेँ कहै छैथ जे 'तूँ हमर बेटा नइ छिऐँ'। जेकर जवाब बेटो दइते छैन जे 'तोहूँ हम्मर बाप नइ छिअ। मुइला पछाइत ने सराध करबह आ ने गंगा-कोसी आकि पोखरियेमे जल-तर्पण करबह'।

ऐठाम मनुक्खक निर्माणक माने अछि जे हर माता-पिता, माने पुरुख-नारी दुनू,क दायित्व बनैए जे अप्पन निर्मित सन्तानकेँ नीक मनुक्खक रूपमे परिणत करैथ। खाएर जे से।

शुभकान्तक अपन बेवहारिक जिनगी ओहन बनियेँ गेल छेलैन जे केतौ निधोख भऽ कऽ बजै छैथ, भलेँ नीक-बेजाए वा तड़ी-घटी ओइ शब्दक बुझैथ वा नहि। शुभकान्त बजला-

"रघुवीर, आब तँ अहीं सभक आशामे गाममे रहब।"

ओना, शुभकान्त कण्ठसँ ऊपरसँ बाजल छला, मुदा कण्ठक निच्चाँमे छिपले छेलैन जे गाममे सरकारी तंत्रसँ जुड़ल केते गोरे अछि, भेल तँ अपन सभ दियादी परिवार मिला सात गोरे आ गाम-समाजमे तीन गोरे, तोहूमे दूटा मुँहचोरे अछि। जइमे एकटा गामसँ बाहरे दरभंगामे मकान बना कऽ रहैए। माने भेल जे एहेन संस्कार, माने सत्ताक संस्कार, गामो-घर मे पसरले अछि। ओहने संस्कारक गछारमे शुभकान्त समय बितलैन, जइसँ हुनकर जीवने ओहन बनि गेलैन जे दू-दिसिया माल चोभैत रहला आ तँए दू-दिसिया बालीकक दिशा सेहो छैन्हे। खाएर.. शुभकान्त आखिर किछु छला मुदा भी.एल.डब्ल्यू तँ छेलाहे।

शुभकान्तक बोली अकानिते रघुवीर भाइक मनमे जगि चुकल छेलैन जे अखन तक गाम-समाजमे किछु परिवार-विशेषक दब-दबा रहबे कएल अछि। ओना, दब-दबाक सेहो दू रूप अछि, एक

अनुरागसँ आ दोसर विरागसँ। ऐठाम हम संन्यासीक चर्च नइ करै छी, तहूमे जे बिनु वैरागेक दिन-राति छिछियाएल घुरै छैथ। ओना, दियादी बँटवारामे शुभकान्तोक एहेन स्थिति बनियेँ गेल छैन जे रहै-जोकर अप्पन घराड़ियो ने छैन जे दुआर-दरबज्जा बन्हता। मुदा शुभकान्त सभ दिनसँ मुँहजोर रहबे केलाह, जइसँ दूटा दियादीक धनक लाभ, माने निवंश होइत परिवारक धन-सम्पैत झींटलैन तँए रहै-जोकर छैन। मिसियो भरि ज्ञान रहितैन तँ कहबो करितैथ आ करबो करितैथ जे दियादी धन दियादक भाग, दियादक हिस्सा।

रघुवीर भाय महाभारतक रथक धुरीक चक्का जकाँ समाजक चक्काक धुरीकेँ उल्टाघुमान घुमा अपनाकेँ समाजक बीच ओइ रूपमे स्थापित कऽ नेने छैथ जे अप्पन हाथ-मुट्ठीक बलेँ समाजमे ठाढ़ छैथ। तँए आत्मबलसँ भरल अपन मन छैन्हे। ओना, रघुवीर भाइक मनमे ईहो उठि रहल छेलैन जे अनेरे गप-सप्पमे समय बिताएब उचित नहि, तहूमे अखन शिकारीक सैरपर छी। आगू बढ़ैत रघुवीर भाय बजला-

“शुभकान्त भाय, समाजमे सभक आशापर सभ जीबै छैथ। मुदा... ।”

ओना, शुभकान्तक मनमे अपन पुस्तैनी विचार ठहैक गेलैन मुदा चटसार परक लोक शुभकान्त बिनु समय गमौने, चिल्होरि जकाँ, माने जहिना चिल्होरि वा कौआ छोट बच्चा हाथक रोटी झपैटकऽ उड़ि जाइए, तहिना बजला-

“जँ से आशापर नहि जीबैत रहैत तखन एना अखन तक समाज ठाढ़ केना अछि।”

बिनु जवाब देने रघुवीर भाय आगू बढ़ए लगला कि स्पष्ट शब्दमे शुभकान्त कहलकैन-

“दू किलो दूध सब दिन दिअ।”

दूधक नाओं सुनि रघुवीर भाय अप्पन दूधक हिसाबो बैसा आ समाजक दायित्व, समाजक दायित्वक माने नब परिवार वा नब लोककेँ पुरान परिवार वा समझदार बेकतीकेँ सहयोग करब, बुझि बजला-

“जखन अप्पन घर वस्तु अछि आ अहाँ नब लोक छी, तखन केना नइ कहब।”

जरूरत तँ जरूरत छी, जेकर प्रभाव जीवनपर पड़ैए, तँए मनमे छिलमिलाहट अनिते अछि। शुभकान्तक मनमे छिलमिलाहट छेलैन्हे, बजला-

“अखन तँ दूधक समय अछिए, माने दूधो आ माछोक बिकरी-बट्टा भोरेमे शुरू होइए, आइयेसँ शुभ-शुभकऽ शुरू करू।”

रघुवीरो भाइक मनमे उठि गेलैन जे दूध भोज्य-पदार्थ छी, अहीपर जीवन ठाढ़ अछि, तँए किए ने मानि ली। परिवारमे जँ दोसर हाथक काज रहैत तँ विचारैयोक समय लेल जा सकै छल। मुदा जे काज अप्पन हाथक अछि, ओकर अधिकार अपने ने राखए पड़त। समाजो तँ समाज छीहे। देखिते छिऐ जे केते घरक जुति मरदनमा अछि आ केते घरक मौगियाही। खाएर जे से। रघुवीर भाय बजला-

“अपना ऐठाम चालीस रूपये किलो दूधक दर अछि, तइ हिसाबसँ अस्सी रूपैया प्रतिदिन भेल, एकर लेन-देन केना करब?”

परजीवी चाइलिक लोक शुभकान्त छथिए, अप्पन गोड़ा-गफ्तर बैसबैत बजला-

“जहियासँ नोकरी शुरू केलौं आ दूध उठौना लिअ लगलौं, तहियासँ महीनावारी हिसाब दैत एलौं हेन।”

रघुवीर भाय बजला-

“की हिसाब, कनी फड़िछा कऽ कहियौ। एकटा हिसाब अछि

जे मास दिनक पाइ पहिने चीजबलाकेँ दऽ देलौं, जइसँ ओकरो जीवन-क्रियामे सुगमता अबैए, दोसर भेल दिनक-दिन लेन-देन आ तेसर भेल महीना दिन वस्तु लेलौं आ पछाइत पाइ देलौं।"

जहिना चलाक लोक शास्त्र-पुराणक खिस्सासँ भाषण शुरू करै छैथ तहिना शुभकान्त भाय बजला-

"रघुवीर की कहियह, ओइठाम माने पूर्णियामे जे आगत-भागत छल से जखन मोन पड़ैए तँ होइए जे जेना स्वर्गसँ धरतीपर आबि गेलौं हेन।"

ओना, रघुवीर भाइक मनमे ठहकलैन जे सरकारी खजाना हाथसँ निकलला पछाइत जेना होइ छै, भरिसक तहिना हिनका भऽ रहल छैन। मुदा अप्पन विचारकेँ अपना मने समेट रघुवीर भाय बजला-

"की स्वर्गसँ धरतीपर कहलिऐ भाय?"

भाषणमे मोड़ दैत शुभकान्त बजला-

"अपना सबहक जे माटि-पानि अछि से जहिना दूध जनमबैक क्षेत्र छी तहिना माछ-मखान सन अमृत वस्तुक क्षेत्र सेहो छीहे, तैठाम जे सुख पूर्णियामे छल से अपना ऐठाम भेटत की नहि.!"

शुभकान्तक बोली रघुवीर भाय अकानिकऽ बजला-

"रघुवीर भाय, विचारकेँ माने लेन-देनक विचारकेँ आगू बढ़ाउ।"

शुभकान्त बजला-

"अप्पन यैह सिद्धान्त रहल जे महीना दिन दूध लेला पूरि गेल, पछाइत पाइ देलौं।"

रघुवीर भाइक मनमे थोड़ेक तिलमिलाहट एलैन। तिलमिलाहट

ई एलैन जे मैट्रिक पास केलाक पछाइत भी.एल.डब्ल्यू.क नोकरी शुभकान्त घरसँ शुरू केलैन, साठि बर्खक पछाइत गाम एला अछि, हम सभ छोट किसानी जिनगीसँ जुड़ल छी, सदिकाल एक ने एक खगता परिवारमे रहिते अछि, तखन जँ अपन गतिशील पूजीकेँ बान्हि दिअए, ई केतौसँ उचित नइ हएत। मुदा नब लोकक संग नब सम्बन्धोक प्रश्न तँ अछिए। अप्पन ओकातिक सीमा देखैत रघुवीर भाय बजला-

“महीना दिनक पछाइतिक जे पाइ देब कहै छिऐ, गाम अखनो गाम छी, शहर-बजारक लोक जकाँ नइ कहैए जे ‘पैसा हो तँ चख, नहीं तो रोड पर जा के झख’। तीस दिनक उधारकेँ पाँच दिनपर लऽ आनू। पाँच दिन पाइ रूकने हमरो बेसी नोकसान नइ हएत आ अहाँक संग लेन-देनक सम्बन्ध सेहो सभ दिन बनल रहत।”

समाजक बेवहारे ने संस्कार निरमबैए। अखन तकक इतिहासक पन्ना यएह ने कहैत आबि रहल अछि जे समाजक विशाल समूह लूटाइत रहल अछि आ अल्प समूह ओकरा धर्म सन भयंकर हथियार आगूमे रखि डरबैत-धमकबैत भावनाक पानि बना पीबैत रहल अछि। खाएर ऐसँ रघुवीर भायकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन मात्र अप्पन आ अप्पन परिवार भरिक। ओना, रघुवीर भाइक मनमे कृष्णक सुदर्शन चक्र जकाँ उठिये रहल छेलैन जे समाजक एक अंग तँ अपनो छीहे, समाज हम्मर विचार किए मानत, मानत तँ तखन जखन ओकरा बोध हेतै जे समाजक एक-एक बेकतीक जिनगी एकैसमी शताब्दीक होइ। बत्ती-खरहीक मड़बासँ आगू बढ़ि हवाइये जहाज परक विवाह-मण्डप किए ने बनइ।

समाजक बीच बेकतीक एतेक तँ कर्तव्य अछिए ने जे समाजक बीच परिवार आ परिवारक बीच बेक्त क्रियाकेँ अपन पारिवारिक क्रिया बना समाजमे अपनो आ परिवारोकेँ ठाढ़ करैथ। ओना, रघुवीर भाइक

मन कहबे करैन जे जइ परिवारक शुभकान्त भाय छैथ ओ परिवार सभदिनसँ चालबाज रहल अछि। मुदा इतिहासक पन्ना तँ वर्तमानक साहित्य नहि भऽ सकैए, ओ भविष्यमे हएत, मुदा तेकर ठेकाने कोन। आजुक जे परिवेश अछि ओइ परिवेशमे समाजक बीच मधुर सम्बन्ध केना बनत?

बजैसँ बेसी मुड़ी डोलबैत शुभकान्त बजला-

“महीना दिनपर पेंशन उठत तखन ने दूधबला, माछबला आकि तरकारीबलाक हिसाब चुकती करब।”

ओना, रघुवीर भाइक मनमे तामस सेहो उठलैन। समाजमे एहेन जे बुड़िवान लोक छैथ जे एतबो नइ बुझै छैथ जे गाम-गाममे सड़क बनने गामक पाइनिक निकास प्रभावित भेल, जइसँ गाम-गाममे पाइनिक जमाव भऽ गेल अछि। पाइनिक जमाव भेने अन्न-पानिसँ लऽ कऽ बेरव-बुनियादि, माल-जाल सभ प्रभावित भेल अछि। जखन कि गाए-महींसकेँ दूधारू बनबैमे घासक चारा अनिवार्य अछि, मुदा पानिक जमाव भेने चासक चास प्रभावित भेल अछि। एहना स्थितिमे किसानक मुहसँ की निकलतैन? रघुवीर भाय बजला-

“शुभकान्त भाय, समाजमे कोनो बेवहार बिना दुनू पक्षक विचारसँ नहि चलत। मनमे एते जिज्ञासा बढ़बे कएल अछि जे अहाँकेँ गाम ऐने एकटा परिवारक वृद्धि भेल। मुदा जँ प्रतिदिनक लेन-देन करी तखन दूध लऽ जाएब नइ तँ नइ आएब।”

आगू बिना किछु बजनहि रघुवीर भाय ओइठामसँ आगू बढ़ि गेला। आगू बढ़ला पछाइत की मन फुरलैन कि नइ, हमरा ऐठाम चलि एला। दरबज्जाक आगूमे रघुवीर भायकेँ देखिते बजलौं-

“भाय, मन बड़ हरियर बुझि पड़ैए, केतौ जजमनिका हाथ लागल की?”

अपना दुनू भाँइमे, माने हमरो आ रघुवीरो भाइक बीच एहेन विचारक सम्बन्ध बनियेँ गेल अछि जे कोन शब्दक माने हँसीक रूपमे अछि आ कोन शब्दक माने गहींरगर अछि, से अपने दुनू भाँइ बुझै छी। रघुवीर भाय कहलैन-

“मनोहर, मन हरियर किए ने रहत। जे अपेछा कहियो बनबे ने कएल माने जे सम्बन्ध बेवहारिक रूप लेबे ने केलक, मात्र भावनामे रहल ओ टुटत की। टुटैत तँ अछि ओ जे टुटैबला अछि।”

❑

शब्द संख्या : 1739, तिथि : 30 दिसम्बर 2022

आब नइ जीब

आने दिन आ अनके सभ जकाँ चारि बजे भोरेसँ सड़कपर दौड़ लगा आएले रही कि दरबज्जापर युगिया भौजीकेँ मुँह लटकौने बैसल देखलयैन। बहुत आश्चर्य नइ भेल मुदा कहब जे आश्चर्य नहियेँ भेल, से आश्चर्य जेते हेबा चाही से भेबे कएल। बहुत आश्चर्य नइ हेबाक कारण छल जे सभ दिनक ई लीला छीहे, कहियो जगिया भौजी तँ कहियो रूसनी काकी, कहियो फुलनी दादी तँ कहियो मुसरी दीदी.. माने कियो ने कियो अप्पन बेथा-कथा नेने आबिये जाइ छैथ जे दिन-दिनक क्रिया भऽ गेल अछि तँए आश्चर्य किए हएत। मुदा जँ कहब जे युगिया भौजीकेँ मुँह लटकौने देखि आश्चर्य नहियेँ भेल सेहो बात नहि, से भेबे कएल।

बिना किछु बजने कल दिस आगू बढ़लौं कि मोन पड़ल नल, माने पानिक टंकीबला नल, नलक मनकेँ कलक विचार रोकलक। आगू बढ़ि कलपर जा हेण्डिल चलेलौं कि शुद्ध पानिक लहैर निकलल। पानि देखि मन पनियाइत पवित्र भऽ गेल। बुझल बात अछिए जे जेते गहींरक पानि रहत, माने परतदार धरतीक गहराइक पानि, तेते बेसी पवित्रो आ शुद्धो होइते अछि। कहब जे गाम-गाम आ घर-घरमे कल भइये गेल अछि। तहूमे जे एकोबेर मुखिया कि पंचायत समिति आकि जिला परिषदक सदस्य भेला ओ अप्पन अगुआर-पछुआर लगा सत्तरह-सत्तरह टा कल गड़ाइये नेने छैथ मुदा से नहि, अप्पन कलक

बात कहै छी। पिताजी जखन मरए लगला तखन कहलैन, ‘बौआ, जिनगी भरि ओतबे कमेलौं जेतेसँ जिनगी चलल। जीवनमे पँच-पँचटा कन्यादान, चरि-चरिटा श्राद्ध कर्म, माने अप्पन माता-पिताक संग काका-काकीक सेहो केलौं। काका-काकीक ऐ दुआरे केलौं जे नि:सन्तान रहैथ। अप्पन जिनगी भरिक कमाइमे जे शेष बँचल अछि तइसँ एकटा कल दरबज्जापर गड़ा लएह।’ आ तखने रूपैआ सेहो देलैन जइसँ पाँच साए फुट गहींरक कल गड़ेलौं, सएह कल छी। एकर माने ई नइ बुझब जे अखन जे टंकी सभ गामे-गाम भऽ रहल अछि तेकर गहराइक बात कहलौं हेन। अप्पन चापाकलक गप कहलौं अछि।

कलपर मुँह-कानमे पानि लेला पछाइत दरबज्जापर आबि युगिया भौजीकेँ कहलयैन-

“थुथुन बड़ खसल देखै छी भौजी.!”

ओना, फागुन महीना अन्तिम उतार-उतैर फगुआक करीब पहुँचिये गेल अछि जइसँ सभ उत्साहित भइये गेल छैथ मुदा तइसँ भिन्न उत्साह युगिया भौजीकेँ देखलयैन। लऽ दऽ कऽ गाममे दुइये टा भौजी बँचल छैथ, आर सभ जहिना एकतीस साए वेदक व्याख्याकारमे पनरहेटा बँचल छैथ बाँकी मरि गेला, तहिना मरि गेली।

लजकोटर रहितैथ तखन ने, से तँ सभ दिनसँ फरहर बोली युगिया भौजीक छैन्हे, बजली-

“आब हम नइ जीब।”

एक तँ भौजीक अन्ने मे छैथ युगिया भौजी आ दोसर एकउमेरिया सेहो छथिए, तँए बजै-भुकैमे सेहो आड़ि-धुर नहियेँ अछि। बजलौं-

“भौजी, जीबी वा मरी से अप्पन मनक विचार भेल, मरैबला

कर्म करब तँ मरब आ जीबैबला कर्म करब तँ जीअब। मुदा, नइ जीब तेकरो तँ किछु कारण हेबे करत किने?"

युगिया भौजीकेँ जहिना हमर बात सुनैमे नीक लगलैन तहिना अप्पन बेथा-कथा सुननिहारो तँ सोझेमे भेटलैन, तँए मन मधुआ गेले छैलैन। बजली-

"बौआ, एना लोके तेहेन भवडाह भऽ गेल अछि जे कियो अप्पन पूजी लगा अनकर पोखरिक माछ नष्ट करैए, तँ कियो अप्पन ढौआ लगा केकरो घर जरबैए। तँए भगवानोसँ बेसी दोखी मनुक्ख अछिए। ओना, भगवानो दोखी छथिए, मुदा ओ कम-सम छैथ, लोक बेसी अछि। अनचोकेमे ठनका किए खसा दइ छैथ। बरखोक तँ अप्पन हिसाब राखक चाहिऐन किने, सेहो नइ रखै छैथ। जखन सभ बुझै छी जे सूर्य अपना धुरीमे नचै छैथ तहिना तँ चानो आ आनो-आन पृथ्वी सहित ग्रह अपना-अपना धुरीमे नचैए, तखन कम-बेसी किए करै छैथ? गोटे साल बेसी बरखे दऽ दइ छैथ तँ गोटे साल नहियेँ बरिस रौदी कऽ दइ छैथ।"

भूगोलक वर्णन युगिया भौजीक मुहसँ सुनि पुछि देलिऐन-

"भौजी, स्कूलो देखने छिऐ?"

भौजी बजली-

"इस्कूलक-तिस्कुलक मुँह नइ देखने छी, मुदा साले-साल जे बरहम स्थानमे भागवत कथा पनरह दिन कातिकमे होइए से तँ सब साल सुनबे करै छी। तइमे जे सुनलौं सएह बजलौं।"

निश्चल, निष्कपट भौजीक मुँहक बात सुनि, बिसवास नइ करितौं से अहीं कहू जे केहेन होइत। बजलौं-

"भौजी, छोड़ू दुनियाँदारीक गप, जानए पृथ्वी आ जानए सुरुज। करखन ग्रहसँ ग्रहण बनि जाइए तेकर कि ठेकान अछि। करखन

माटिक ढेरी आकि आगिक ढेरी बनत कि करवन पार्वती आकि प्रकाशित ज्ञान बनि जाएत तेकरो कोनो ठेकान अछि। अहाँक मन किए खसल अछि, से बाजू।"

युगिया भौजी बजली-

"बौआ, जीवन मरि रहल अछि.!"

'जीवन मरि रहल अछि' युगिया भौजीक मुँहक बात कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। भाँजोपर केना चढ़ैत, अखनो जीवन माने जीनाइ बुझै छी, चाहे जे जीवन हुअए। मुदा ई नइ बुझै छी जे जीवन वृत्ति (कर्म) पर ठाढ़ अछि। ओना, गामक लोक कियो युगिया भौजीकेँ 'तरकारीवाली दादी' तँ कियो 'तरकारीवाली काकी' कहिते छैन मुदा अपने परहेज केने रहलौं जे कहियो 'युगिया भौजी'केँ 'तरकारीवाली भौजी' नइ कहलयैन। अखनो नइ कहै छिऐन आ मरियो जेती तैयो ने कहबैन। वृत्ति-वृत्तिक बिर्त (खेल) छीहे। कर्म आधारित मान-अपमान सेहो अछिए। कर्म-कर्म छी, जे जीवने करत, मुदा कर्मक मान कम भेने जीवनक मान कम हुअए ई केतौसँ उचित नहि अछि। कबीरदास कपड़ा बुनकर छला आ केतेको महापुरुष (साधक) आसन पकैड़ साधना करै छैथ, तँए सिद्धिमे कमी-बेसी कहल जाए सेहो तँ उचित नहियेँ अछि। हँ, एते जरूर अछि जे सिद्धि-सिद्धमे अन्तर हेबे करत। बाघ-सिंह हुअ आकि नढ़िया-गीदर, ओकरा सभकेँ एकरंग बन-जंगल भेटै छै मुदा मनुक्खमे से बात नइ ने अछि। अगुआएल-पछुआएल अनेको खाढ़ीमे मनुक्ख बाँटल अछिए।

ओना, फागुन मासक फगुआक लहैरिक जुआरि बुझियौ आकि मनक आवेग, मुहसँ बजा गेल-

"जीवन ने मरि रहल अछि भौजी, अपने नइ ने अखन मरब।"

जहिना कोनो हँसी-चौलकेँ कियो गम्भीर रूप पकैड़ अड़िकऽ

ठाढ़ होइए तहिना युगिया भौजी अड़िकऽ ठाढ़ होइत बजली- "बौआ, साठिम बरख पैछले साल पूरि गेल, ऐबेर एकसैठिम छी, अखन तक जहियासँ अपना ऊपर परिवारक भार पड़ल तहियासँ माथपर तरकारीएक पथिया लऽ समाजमे अँगने-अँगने बेचबो करै छेलौं जइसँ दू पाइक कमाइयो होइ छल आ परिवारक नीक-बेजाए गप-सप्प सेहो करै छेलौं, मुदा आइ ओ सभ मरि रहल अछि। आब अहीं कहू जे केना जीब?"

युगिया भौजीक गम्भीर प्रश्न सुनि मन ठर्ड़ा गेल। शरीरक क्रियासँ मनक क्रिया धरिक विचार युगिया भौजी एक्के पाँतीमे बाजि गेली। आगू-पाछू देखए लगलौं, माने सोचए-विचारए लगलौं तँ देखि पड़ल जे समयकेँ आगू बढ़ने आइ नव-नव तरकारी बेचनिहारक जन्म भेल अछि। माथपर जैठाम एक पथिया तरकारीक लाभसँ माने दस-पनरह किलो तरकारी बेचिकऽ परिवार चलै छल, उपजौनिहार अलग भेला, हुनकर मूल्य अलग भेलैन, मुदा तइसँ युगिया भौजीक पाँच गोरेक परिवार तँ ओहीसँ चलै छेलैन, जखन कि तेहने परिवारमे ठेलाक वेपारी बनने आइ दस-पनरह किलोक लाभक जगह क्विन्टल-दू-क्विन्टलमे बढ़ि गेल अछि। दोसर दिस, युगिया भौजी दिस देखी तँ स्पष्ट देखि पड़ए जे दोसर कोनो लूरि-बुधि तँ छैन नहि। जेहो छैन से खटबसँ लऽ कऽ अप्पन हिसाब-बारी जोड़ै धरिमे समटा गेल छैन, तैठाम लगले केना दोसर जीवन ठाढ़ हएत।

मौसम दिस, माने समयक अनुकूलता दिस तकलापर देखिऐ जे लोके जकाँ समयो बँटाएल अछि। जहिना गरीब लोककेँ जीवनक आवश्यकते कम अछि, जेहो अछि ओ अभावेमे खगि जाइए आ धनीक लोककेँ बेसी सम्पदो अछि आ बेसी पुरतियो तँ होइते अछि, तहिना समयोक अछिए। कहब जे समय तँ अजन्मा छी, ओ अपन धुरीपर सालो भरि अपना गतिये चलबे करैए आ आगूओ चलिते रहत।

समयक प्रभाव जीवनपर की पड़ैए, सेहो तँ सबहक सोझेमे अछि। देखिते छी जे जाड़क मासमे पानिक तृष्णा कम होइए आ अन्नक (भोजनक) बेसी होइए। जैठाम अन्नक तृष्णा बढ़त तैठाम अन्नक खगतो ने बेसी हएत। गरमी मासमे एकाध दिन लोक पानियोँ पीब जीवन चला लइए, से जाड़क मासमे थोड़े हएत। जँ पानिसँ काज चलबए चाहब तँ एक दिस अन्नक गरमी कमत, ठंढपन औत आ दोसर दिस पानिक ठंढपन सेहो शरीरकेँ ठंढे बनाएत, तैपर सँ शीतलहरीक प्रकोप भिन्न, तखन कहू जे एहेन समयमे लोकक जीवन केना चलत। तहिना वस्त्रक सेहो अछि, गरमी मौसममे कमो कपड़ासँ जीवन चलि सकैए मुदा जाड़ तँ से नहि छी। जाड़क जेते कनकनी रहत ओते वस्त्रक खगता हेबे करत। तहिना घरक सेहो अछि। जाड़क मुकाबला करैले नीक घरक खगता होइते अछि। नीक घरक माने ई नइ बुझब जे अपन जीवनक श्रमकेँ दोसराक हाथे बेचि, स्वतंत्र श्रमण जीवनसँ लाखो कोस दूर हटि, जीवन-यापन करी मुदा घर मजगूतो आ सुनरो बनाबी। जीवनक स्तरक हिसाबसँ घर जँ होइ तँ उचित भेबे कएल। जँ से नहि तँ जीवन रस्ता परक धूरा जकाँ अधूरा बनियेँ जाइए। कहब की अधूरा? जीवनक जे मूल तत्त्व अछि तइमे परिवेशक हिसाबसँ बदलाउ सेहो अबैए, तेकर सर्वांगीण स्तर एक सीमामे हेबा चाही। अपनो सभकियो जनिते छी जे जैठाम जन्म नेने छी माने जइ देश वा समाजमे, ओकर जे आमद खर्च अछि माने आय-व्यय, तेकरो तँ एक सीमा छइ। कुबेरक भण्डार जकाँ नहि ने अछि जे आमदक हिसाबे ने बुझल रहत आ मन कहत केतबो खर्च हएत तैयो ओ सठत थोड़े। एकाएक विचार मोड़ लेलक। मोड़ ई लेलक जे समयकेँ जखन अपने पकैड़ चलब तखन ने जीब। जँ समयक आशा देखैत रहब तँ केना समय ससैर कऽ ससारए लगत तेकर कोनो ठेकान अछि। एक तँ ओहुना एक घटना रहितो गरमी मौसममे जेते बोलीमे टाँस रहैए तेते

जाड़क मासमे नहियेँ रहैए। ..अपने मने-मन विचारिये रहल छेलौं आ तँए मुहोँ बन्ने छल। मुदा युगिया भौजी तँ बजन्ता लोक छथिए। हुनका अपना मनमे जे रहल हौन मुदा अपना बुझि पड़ल जे भौजी बेसी चिन्तित छैथ। चिन्ताक हाल-चाल आ कुशल-समाचार आकि बिआहे-दुरागमनक हाल-चाल चाहे कोनो पावनिये-तिहारक हाल-चालमे तँ अन्तर होइते अछि। तैबीच अपने फुरने युगिया भौजी टोकि देली-

"चुप किए छी बौआ, लोको देखत तँ की कहत.!"

बिनु विचार केनहि भौजीक प्रश्नक उत्तर देलिऐन-

"लोक की कहत.! लोक पहिने अप्पन बेथा-कथा बुझि लिअ तखन दोसरकेँ कहत।"

हमर विचार सुनि जेना भौजीक मनमे शीतलपन एलैन तहिना बजली-

"तेहेन ने जाड़ आबि गेल अछि जे केते बुढ़-पुरानक श्राद्ध हएत।"

अपना बुझि पड़ल जे भरिसक भौजीक मनसँ अप्पन बेथा मेटा अनका दिस बढ़ैत आब मृत्युपर आबि गेलैन अछि। ऐठाम मृत्युक माने ई जे जँ मनुक्ख अपन अन्तिम सीमा, मृत्युक रहस्य बुझि जाए तँ अनेरे मनसँ राग मेटा जाएत आ विराग आबि जाएत। जखने विराग तखने जीवन। बजलौं-

"भौजी, अहाँक मनमे अप्पन श्राद्धक भोज ने तँ आबि गेल अछि। अच्छा जे अछि आकि जे आबि गेल हेन, तेकरा अखन कात-के ताबे राखि पहिने एकबेर चाह पीब?"

जइ तरहक युगिया भौजीक संग अप्पन सम्बन्ध अछि तइमे आइ तक युगिया भौजी अपना लगमे बैस चाह नइ पीलैन अछि, से बिसैर गेलौं आ दरबज्जाक मान रखैत बाजल छेलौं।

युगिया भौजी बजली- “अहाँकेँ कोनो गत्तरमे लाज नइ अछि.!”

युगिया भौजीक विचार मनकेँ चौंकेलक। बुझि पड़ल जे युगिया भौजी पछारि देलैन। उन्टा दाँव लगा अपने तरसँ ऊपर अबैक गर लगबैत बजलौं-

“भौजी, दुनियाँदारीक बात छोड़ू, बड़ीटा दुनियाँ अछि, अनेरे केतए वौआइले जाएब। अप्पन जे बेथा अछि तैपर विचार करू।”

युगिया भौजीकेँ विचार नीक लगलैन, जइसँ मनमे थीरपन एलैन। बजली-

“बौआ, अखन तकक जे जीवन रहल, माने माथपर पथिया लऽ कऽ तरकारी बेचब, ओ आब जेना मेटा रहल अछि। ओही घट्टा-नफ्फामे अपने पड़िकऽ पछैड़ रहल छी।”

एक्के मुहेँ युगिया भौजी घट्टा आ नफ्फा दुनू बात बजली तँए बीचमे सोन्हि देखि गर भेटल। बजलौं-

“की घट्टा-नफ्फा, भौजी?”

युगिया भौजी तरे-तर मनसँ विचारि बजली-

“बौआ, घट्टा ई भेल अछि जे बिकरी बन्न भेने समाजमे आबा-जाही कम भऽ गेल, जइसँ जे उधारी लागल अछि ओहो डुइम जाएत। आ नफ्फा ई देखि रहल छी जे अपने दस सेरक कमाइ करै छेलौं आ आब जँ बेटा-पुतोहु वएह कारोबार करत आ ठेलाक सहारा लेत तँ बोरा-दू-बोराक कारोबार करत जइसँ परिवारक आमदनी बढ़बे करत किने।”

युगिया भौजीक विचार मनमे बंशी लागल माछ जकाँ घाव केलक। सोभाविके अछि जे कामगारकेँ जीवनक अनुकूल काम भेटने सफलताक आशा बढ़िये जाइए। जखन छेहा किसानी जीवन रहैए वा हाथक कोनो दोसरे काजक जीवन रहल, तखन स्वचालित तेज मशीन

नहि, हथकरघा बेसी उपयोगी होइए। मुदा जेना-जेना जीवनमे उन्नति होइत जाइए तेना-तेना मशीनक गतिक अनुरूप अभ्यास सेहो बनैए। मुदा से बजलौं नहि। बजलौं- "भौजी, केते गोरेक परिवार अछि?"

परिवारक नाओं सुनिते, माने परिवारक जिज्ञासा सुनिते युगिया भौजीक मन खुशीसँ दहैल गेलैन। दहलाइत बजली-

"बौआ, खाइकाल भनसाघर भरि जाइए मुदा काज करैकाल सोल्होअना अपनेपर रहि जाइए।"

युगिया भौजीक बात सुनि बजलौं-

"बेटा-पुतोहु सभ किछु ने करैए?"

अप्पन बड़प्पनक मर्यादा बँचबैत युगिया भौजी बजली-

"बौआ, जाबे अपने जीबै छी ताबे बेटा-पुतोहुकेँ कमाइले केना कहबै।"

युगिया भौजीक विचार सुनि मने-मन हँसियो लगए जे ई तँ ओहने नवयुवकक पइर भऽ गेल अछि जे बैंकक लोन लइक पाछू सालक-साल वौआइए आ अप्पन पूर्वजक देल लाख-लाख रूपैआ कट्ठाक दामक पँच-पँच-दस-दस बीघा जमीन, इज्जतक नामपर ट्रान्सफर नइ करता। भाय जखन जीवन बदैल रहल अछि, तखन सम्पैतिक स्वरूप सेहो बदलबे करत किने। जे सम्पैत किसानी जीवनमे खेबाक वस्तु उपजबै छल वएह सम्पैत मशीनी जीवनमे मशीनक रूपानुकूल जीवनक अधिकतर खगताक पूर्ति करैमे उपयोग हएत। जे पूर्वजक मान-प्रतिष्ठा बुझि, अपने बेरोजगारक रूप बना बैसल छी। ..धरतीपर ठाढ़ होइत बजलौं-

"भौजी, अखन कने दोसर काजक बेगरता भऽ गेल अछि, ने तँ नीक जकाँ कहितौं जे युग बदलने केना लोक जगैए आ केना लोक सुतैए।"

‘केना लोक जगैए आ केना लोक सुतैए’ से बात सुनि आकि युगिया भौजीक मनमे अपने कोनो बात उठि गेलैन, से तँ युगिया भौजी अपने जनती मुदा एतबे बजली-

“बौआ, अखन जाइ छी, अहूँ अप्पन ताक सम्हारू, मुदा पहिल साँझ तँ नइ आबि हएत, दोसरि-तेसरि साँझ धरि एबे करब। जाबे मन नइ भरिकऽ मानत ताबे थीर केना हएत।”

बहाना बनबैत बजलौं-

“बेर-मे अनतए जाएब, तँए वापस अबैक कोनो ठेकान नइ अछि। अहाँ आबी आ अपने नइ रही तखन फेर ने अहाँ गरिऐबिते घुमब।”

युगिया भौजी बजली-

“काल्हि भोरमे आएब।”

की कहितिऐन, बजलौं-

“आएब।”

❑

शब्द संख्या : 2097, तिथि : 2 मार्च 2023

सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल

जेठ मासक दसराहा माने दसमी तिथिक शुक्र दिनक भिनसुरुका समय। चाहक प्रतीक्षामे निर्मल बाबा दलानक ओसारक चौकीपर बैसल अँगनमुहाँ देखि रहल छला। औझुका काजक बोझ माथकेँ दबने छेलैन। अप्पन गाछी-कलमक ताक-हेरक संग आइ समाजक उत्सव सेहो छीहे, तँए ओहूमे भाग लेबेक अछि। 'भाग लेबेक अछि'क माने जिज्ञासा रहित नहि बुझब, अपनो जिज्ञासा छैन्हे जे समाजक बीच जे कोनो उत्सव अछि ओ सभक उत्सव छीहे, तँए अपनो उत्सव भेबे केलैन। ओना, निर्मल बाबाक मनमे दोसरो विचार जगि चुकल छेलैन ओ छेलैन जे किछु बर्खसँ, परिवेशमे बहुत बदलाव आएल अछि, लोको सभ केते आएल आ केते गेबो कएल तँए आजुक जे दृश्य अछि तेकरा ढंगसँ देखब अछि।

ब्रह्मस्थान कहियौ कि डिहवारक स्थान आकि गाम-देवताक स्थान, जइमे आइ लोक घोड़ा चढ़ौत। अखनो आ किछु बरख पूर्वो तक परिवारक कुमार बच्चा, माने बिनु बिआहल बच्चा अपन माइक संग जाइ छल आ गाम-देवताक स्थानमे घोड़ा चढ़ेबो करै छल आ चढ़ैबतो अछि। चङेरामे माटिक घोड़ाकेँ साजि माए फूल-पानक संग ब्रह्मस्थान जाइ छैथ आ बच्चा हाथकेँ बेरा-बेरी सभ किछु दइ छथिन आ बच्चा ऐगला वाहन बनि अपन घोड़ाकेँ पैछला घोड़ाक आगूमे सजबै छैथ। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि एक्के स्थानक

तीन नाम। ब्रह्मस्थान, डिहवार स्थान आ गाम-देवताक स्थान। मुदा अखन से नहि, अखन बस एतबे जे घरसँ घोड़ा सजि केना ब्रह्मस्थान पहुँच रहल अछि, बस एतबे जिज्ञासा निर्मल बाबाक मनमे छैन। ईहो नइ मनमे छैन जे जैठाम माइक माथपर सजल घोड़ा कुमार बच्चाक हाथे चढ़ैए तैठाम परदेशी युवक-जहान आ गामक नवयुवकक सेहो संख्या बढ़ि गेल अछि तैसग घोड़ाक (चढ़ौआ घोड़ाक) सवारी सेहो बदैल रहल अछि। गमैया साइकिल तँ कम्मो-सम्म मुदा मोटर साइकिल आ इंजनबला चरिचकिया गाड़ीक संख्या बढ़िये गेल अछि। जइपर सजि कुम्हारक बनौल माटिक घोड़ा ब्रह्मस्थान पहुँच रहल अछि। से अप्पन आँखिये निर्मल बाबाकेँ देखैक छैन। मुदा चाह पीने बिना दरबज्जापर सँ उठबोकेँ नीक नइ बुझि रहला अछि। तहूमे जीवन भरि पत्नीक बुझल वृत्ति छैन्हे, तेकरो छोड़ब उचित नहि बुझि रहला अछि।

पत्नीक वृत्तिक माने एतबे अछि जे सुलछमी दादी, जिनकर उमेर साठि बर्खसँ ऊपर भऽ गेल छैन, बेटी जखन चेष्टगर भेलैन तखन भनसाघरक आधा काजक भार सुमझा देलखिन आ जखन पुतोहु एलैन तखन सोल्होअना भनसाघरक भार बेटी-पुतोहुकेँ सुमझा देलैन, मुदा पतिव्रत कहियौ आकि पत्नी धर्म, ऐठाम पतिव्रतक माने भनसियाक व्रत बुझू, से अखनो सुलछमी दादी अपने हाथे निमाहै छैथ। ओ व्रत छी जे पतिकेँ भिनसुरुका पहिल चाह कहियौ आकि दिनक पहिल बेरक चाह अपनेसँ बनाकऽ पिआएब। कोनो सार्वजनिक स्थल हुअ आकि बेकतीगत जीवन, जीवनक पहिल कदमक महत्व अछिए।

मने-मन निर्मल बाबा अप्पन गामक चौबट्टीकेँ ठिकिया मन असथिर केलैन। समाज दिससँ ससैर निर्मल बाबाक मन अप्पन जीवन दिस एलैन। अबिते जहिना खेतमे धान फुटैए तहिना निर्मल

बाबाक मनक विचार फुटलैन। विचार फुटिते धानक लावा जहिना खापैड़सँ चनचना कुदैए तहिना निर्मल बाबाक मुहसँ निकललैन-

“सिहन्ता-सिहन्ते रहि गेल.!”

ओना, असगरेमे बैसल निर्मल बाबक मुहसँ निकललैन मुदा तैबीच सुलछमी दादी चाह नेने लगमे पहुँच गेली, तँए ओहो सुनलैन। सुनिते सुलछमी दादीक मनमे भेलैन जे भऽ सकैए हमरा देखिकऽ पति बाजल होथि, तखन जँ दोहराकऽ नइ पुछऐन सेहो केहेन हएत, मुदा मनमे ईहो होनि जे जाबे मुँहक आहार मुँहमे नइ लेता ताबे किछु पुछब आकि कहब उचित नइ हएत। किए तँ अपने कानक सुनलो आ मनक पढ़लो एकटा कथा हुनका मनमे नचलैन। युग-युगक युगकर्त्ताक खेल चलबो कएल अछि आ चलितो तँ आबियेे रहल अछि। कथा अछि, एकटा गामकेँ चौबगलीक पाँच कोसक गामक लोक कहए लगल जे भोरे-भोर जे ओइ गामक नाओं लेत ओकरा भरि दिन अन्नक भोग नइ हेतइ। किए कहए लगलै से अखन नहि, अखन बस एतबे जे चारूकातक लोक कहितो आबि रहल अछि आ कहबो केलक। गाममे एकटा वैज्ञानिक भेला। हुनको कानमे एहेन प्रश्न देल गेलैन। प्रश्न एला पछाइत वैज्ञानिकजी पहिल दृष्टि[1]सँ जखन तजबीज केलैन तँ हुनका सोल्हन्नी तखन अनसोहाँत बुझि पड़लैन। मुदा जखन समाजक विचारक परम्परा दिस तजबीज केलैन आ परम्परा रोकैक शक्ति अपनामे अँटकारलैन तखन बुझि पड़लैन जे जेतबो मान-सम्मान पेलौं अछि सेहो चलि जाएत.! असमंजसमे पड़ल वैज्ञानिकजी जी-जाँति कहियौ आकि जी-तोड़ि, बजला-

“एहेन विचार सोल्होअना सत्य अछि।”

बजैक क्रममे वैज्ञानिकजी बाजि गेला, आब ओकरा

---

[1] **आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि**

प्रयोगशालामे प्रयोग करि कऽ निर्णय कएल जाएत। गामक जेते गाछी-कलम अछि तइमे सभसँ बेसी कोन गाछपर चिड़ै रहैए। किछु किस्मक गाछ गाम-घरमे अखनो ओहन अछिए जैपर चिड़ै बेसी बइसैए। ओही गाछक नियुक्ति भेल। गामक लोकक बीच ने फूसि हएत मुदा अनगौंआँक समर्थन भेटने तँ फुसियो सत्य हेबे करैए। गामक नवयुवक चूड़ा-दही-चिन्नी-केरा इत्यादिक ओहन भोजनक ओरियान केलैन जेहेन अनगौंआँ अतिथि-अभ्यागतकेँ भोजन करौल जाइए।

तेसर दिन भने एकटा अनगौंआँ अपना गामसँ आन गाम जाइ छला। बीचक गाममे प्रयोगशाला बनल अछि। नवयुवक सभ हुनका पकैड़ गाछक निच्चाँ ठाँउ कऽ नारक बीड़ीपर बैसा भोजनक सभ विन्यास परसलैन। भोजन करैसँ पहिने युवक सभ कहलकैन-

“भोजनक सब विन्यास आगूमे अछि, आब ओइ गामक नाम लइमे माने जइ गामक नाम लेलासँ अन्नक भोग नइ होइए, कोनो हर्ज नइ ने?”

अनगौंआँ बजला-

“जाबे मुँहमे अन्न नइ लेब ताबे तक नाम नइ लेब। तखनो तक कोनो आशा नहि।”

युवक सभ बलजोरी गट्टा पकैड़ कहलकैन-

“आब बाजू।”

जखने अनगौंआँ अभ्यागत ओइ गामक नाम लइ गेला, जइ गामक नाम लेलासँ अन्नक भोग नइ होइए कि तखने गाछक ऊपरसँ एकटा कौआ चट कऽ देलक। चट करिते अनगौंआँ अभ्यागत बजला-

“देखलिऐ.! आब अहाँ सभ भरि दिन भूखल राखब किने।”

चारि-पाँच घोंट चाह जखन निर्मल बाबा पीलैन तखन सुलछमी

दादी बजली-

“की बजलिऐ जे सिहन्ता सिहन्ते रहि गेल?”

चाह अप्पन रंग निर्मल बाबाकेँ पेटसँ देखबए लगलैन जइसँ मन फुहराम जकाँ भइये गेल रहैन। निष्कपट रूपमे बजला-

“सिहन्तासँ रोपल दूटा आमक गाछ अछि। भरिसक अहूँकेँ मोने हएत जे छठम साल पूसाक किसान मेलासँ अनलौं।”

एक तँ ओहुना पत्नीमे एहेन अभ्यास बनियेँ जाइए जे बिनु विचारनौं ‘हँ-मे-हँ’ मिला दइते छैथ, तहिना सुलछमी दादी हूँहकारी भरैत बजली-

“हँ से तँ अननहि रही।”

कोनो घटनाक एक्को अंश भेटने लोक काल्पनिक घटना गढ़िये लइए, तहूमे जैठाम सनेस रहत तैठाम तँ आरो मजगूतीक संग गढ़ल जाएत। निर्मल बाबा बजला-

“ओहीठाम सँ ने दूटा आमक गाछ अनने रही आ कहने रही जे साल भरिक पछाइत जखन गाछ फड़ए लगत तखन बारहो मास आमो आ आमक चटनी सेहो खाइत रहब।”

आमक अँचारक चर्च ऐ दुआरे नइ केलौं जे बीस-बीस बर्खक आमक अँचार योगनी दादी-काकी सभ घरमे रखनौं रहै छैथ आ साले-साल बनैबतो छथिए। जहिना अँचार तहिना घीबोक अछि, चालीस-पचास बर्खक पुरान घी भेटिते अछि। खाएर से अखन नहि।..सुलछमी दादी बजली-

“हँ, तेकर की?”

पत्नीक प्रश्न सुनि निर्मल बाबाकेँ परबा-पौरुकी जकाँ दम घूटए लगलैन। दम ई घूटए लगलैन जे अप्पन हारल दाउ बाजी कि नइ

बाजी। निर्मल बाबा ओहन अखड़ाहा परक पहलवान छैथ नहि जे बुझि पौता जे नीको अधला होइए आ अधलो नीक होइए। ई तँ मनक विचार कहियौ कि शब्दक खेल कहियौ, से छी। सभ जनिते छी जे तिलकोर आ कुरली[2] एक्के वंशक लत्तीनुमा गाछ छी। जहिना तिलकोरक तहिना कुरलीक लत्तीक जड़ि उज्जर होइए आ तहिना लत्तीक बढ़वारियो दुनूक एक्के रंग अछि आ जहिना पत्ताक रंग-रूप, आकार-प्रकार एकरंग अछि तहिना फूलो-फड़क अछिए। मुदा एकटाक पात खाएल जाइए आ दोसराक फड़। कहब जे एना किए अछि, से तँ ओइ लत्तीकेँ पुछियौ जे तोहर फड़ मीठ आ पात तीत किए होइ छह आ दोसराक पाते किए मीठ होइए आ फड़ तीत।

मुदा निर्मल बाबाक मनमे जे हारल सन बुझि पड़ि रहल छैन तेकरा काजक डोरिसँ बान्हि बजला-

“जड़ियेसँ कहि दइ छी, अहाँकेँ अखन तक सभ बात कहबो ने केलौं आ जे कहलौं से मनो हएत कि नहि।”

भाय, जहिना पत्नीक विचार सुनैले पतिकेँ आ पतिक विचार सुनैले पत्नीकेँ, सभक मनमे जिज्ञासा होइते छैन तहिना सुलछमी दादीकेँ सेहो भेलैन। बजली-

“कनी सेरियाकऽ बाजब, ई नहि जे ‘नख-शिख वर्णन’ नहि कए ऊपरे-झापड़ बाजि, माने शिखे-नखक वर्णन कए पछाइत पुइछ दी जे नीक जकाँ बुझलौं कि नहि?”

पत्नीक विचार सुनि निर्मल बाबाक मनमे पाथरक अमृत रस जकाँ माने शिलाजीत जकाँ सुअदगर विचारसँ भेँट भेलैन। शिलाजीतक रस जे पानियेँ जकाँ अछि तँ की ओ मक्खनक फटौन-पानि थोड़े हएत। हीय खोलि निर्मल बाबा बजला- “तीन तरहक बैसार

---

[2] **कुण्डली**

पूसाक किसान मेलामे भेल छल, एकटामे अन्नक चर्च चलल, दोसरमे तीमन-तरकारीक आ तेसरमे फल-फलहरीक। अहूँ जनिते छी जे अपने फल-फलहरीसँ विशेष सिनेह अछि आ ओइसँ कम सिनेह तीमन-तरकारीसँ आ तहूसँ कम अन्न-पानिसँ अछि।"

सुलछमी दादीकेँ निर्मल बाबाक विचार सुनैमे नीक लगलैन। नीक किए लगलैन से तँ ओ अपने बुझती मुदा तेसर माने आन तँ यएह ने बुझत जे जीवनमे कहियो सुलछमी दादीकेँ फल-फलहरी वा तीमने-तरकारी वा अन्ने-पानिक दुख नइ होइ छैन, तँए हुनकर मन सदिकाल अरबा चाउरक बसिया भात जकाँ फरहर रहबे करै छैन, सुलछमी दादी बिहुँसैत बजली-

"अहीं पेब ने सब किछुसँ सम्पन्न परिवार अछि।"

एक तँ अप्पन जीवनक चोट खाएल निर्मल बाबाक मन रहबे करैन, तँए होनि जे जोर-जोरसँ बाजी जे सपना सपने रहि गेल, मुदा रहैथ तँ दुइये गोरे। दू गोरेमे लोक कनफुसकियोसँ काज चला लइए, तैठाम जोरसँ बजैक कोन खगता अछि। कमो-जोरसँ लोक सत्य बात बजैए आ सोझा-सोझी जोरोसँ बजिते अछि।

जहिना कल्पनाकेँ थुथुनो नमगर होइए आ नाङैर सेहो नमगरे होइए तहिना सपनाक सेहो दुनू नमगर-चौड़गर होइते अछि। निर्मल बाबा बजला-

"अहाँ एतबेमे परिवारकेँ सम्पन्न बुझै छी। जेना अपने सुनलौं तँ सुनिकऽ पाँच साए रूपैआमे दूटा बरहमसिया आमक गाछ कीनिकऽ आनि रोपिकऽ सेवा केलौं आ आइ जेठक दसराहा छी, जँ एकोटा आम पाँच बर्खक बीच भोग भेल रहैत तँ संतोष होइत। ओ सम्पन्नता तँ परिवारमे नहियेँ आएल।"

ओना बजैक क्रममे निर्मल बाबा बाजि गेला मुदा पछाइत अपने

मोन पड़लैन जे भूगोलक दृष्टिसँ खेतीक काज ठानब उचित छल, मुदा से नहि भेल। आब तँ यएह ने उचित जे आजुक भौगोलिक परिवेशकेँ देखैत क्रियाशील होइ। ओना, जीबठगर लोक पाथरोपर दुभि जनमैबते छैथ आ भविष्यमे सेहो जनमेबे करता।

संयोग बनल, तहीकालमे रास्ता धेने अपने झंझारपुर जाइत रही कि निर्मल बाबा देखलैन। देखिते दरबज्जेपर सँ शोर पाड़ैत बजला-

"रमाकान्त, कनी सुनि लएह तखन जइहह।"

ओना, रही अपने अगुताइमे मुदा निर्मल बाबाकेँ सभ दिनसँ श्रेष्ठ बुझैत आबि रहल छिऐन तँए ठाढे-ठाढ़ सुनैक विचार मनमे रोपि लगमे पहुँचते बजलौं-

"की कहै छी बाबा?"

जेना पाशापर माने जीवनक पाशापर निर्मल बाबा हारि रहल छला तहिना मन तीताएल छेलैन। मुदा मनमे एते तँ छैन्हे जे केकरा लग केहेन शब्द केहेन भावमे बाजी। बजला-

"रमाकान्त, मरब की जीब तेकर कोनो ठेकान नहि अछि, अप्पन जीवनक घटल घटना एकटा अछि से पहिने सुनि लएह, पछाइत आगू बढ़िहह।"

निर्मल बाबाक विचार सुनि अपनो मनमे नव जिज्ञासा जगल जे जीवन केकरो किए ने होइ मुदा जीवन तँ जीवन छी। तहूमे मनुक्खक जीवनक घटना छी, कहियो ने कहियो खगता हेबे करत। बजलौं-

"बाबा, बेसी आहे-माहेमे नइ कहियौ, कनी अगुताएल छी। मुदा अगुताइमे एहनो विचार नइ छोड़ि देबै जइसँ विचारे घवाह, घवाह माने अधबुझू, भऽ जाए।"

अप्पन मनक सभ बात बजैक जगह पेब निर्मल बाबा बजला-

"रमाकान्त, तोरासँ परोछोमे पत्नीकेँ किछु बात कहि देने छिऐन,

मुदा ओ पारिवारिक भेल। जड़ियेसँ कहि दइ छिअ।”

कोनो घटना वा काजकेँ जड़िसँ छीप धरि सुनिकऽ गुनबे ने बुधिक (ज्ञानक) गुनब भेल। मने-मन मनकेँ ब्लैक बोर्ड जकाँ साफ करैत बजलौं-

“कहियौ?”

निर्मल बाबा बजला-

“तोहूँ देखै छह रमाकान्त जे अनका जकाँ मनमे अखनो माने साठि बर्खक उमेर बितला पछातियो, मनमे नइ आएल अछि जे आब जे कोनो फल-फलहरीक गाछ रोपब, तँ अपनो भोग हएत कि नहि, तँए रोपबे ने करब। शुरूहेसँ सभ दिन मनमे एहेन धारणा बनले अछि जे सभ दिन किछु-ने-किछु नव लगाबी। तँए पाँच बरख पूर्व जखन फल-फलहरी भोजनक गुण बुझलौं तखन ठिकियाकऽ किसान मेलामे पूसा पहुँचलौं।”

ओना, पूसाक किसान मेलामे भाग लेबाक इच्छा अपनो मनमे केते दिनसँ अछि मुदा कुसंयोग एहेन होइत रहल जे अखन तक नहियेँ जा भेल अछि। बजलौं-

“मेलामे की सभ देखलिऐ, बाबा?”

निर्मल बाबा निष्कपट भावमे बजला-

“देखै-सुनैक की कोनो ठेकान रहल, बहुत लोको देखलिऐ आ खेती-वारीक बहुत गाछ-बिरीछ, बीआ-बाइल सेहो देखलिऐ मुदा से सभ कथीले। अपने दूटा बरहमसिया आमक गाछ कीनलौं। मन सपनाएले छल जे बारहो मास जखन आम सन फल भेटत तखन जीवनमे खगते की रहि जाएत।”

आगूक बात बुझल रहैत तखने ने से तँ छल नहि, तँए बजलौं-

“अहाँ तँ बाबा कमाल कऽ देलिऐ। तेहेन ठिकिया कऽ गोटी

चाललौं जे एक्के गोटीमे पार भऽ जाएब।”

अपना जनैत नीके बात बाजल छेलौं मुदा निर्मल बाबाकेँ नीक नइ लगलैन। बजला-

“की गोटी चालब, सभ पानिमे चलि गेल।”

बजलौं-

“से केना बाबा?”

निर्मल बाबा बजला-

“तोहूँ बजार जाइक धड़फड़ीमे छह आ अपनो बजैमे संकोच होइए, एतबे बुझह जे आइ जेठक दसराहा छी, ओना लोक बरिसाइते दिनसँ आम खाएब शुरू करै छैथ, मुदा अपना पाँच बरख पूर्वक सिहन्ता अखनो सिहिन्ते बनल रहि गेल अछि।”

बजा गेल-

“से केना बाबा?”

निर्मल बाबा बजला-

“निचेनमे दोसर दिन जड़िसँ छीप धरि सबटा सुना देबह।”

अकछाइत निर्मल बाबाकेँ देखि बजलौं-

“अखन जाइ छी बाबा, मुदा सुनब बाँकी रहल।”

❑

शब्द संख्या : 2013, तिथि : 06 मार्च 2023

धुरफन्ना लोक

रातिमे एकटा घटना भेल, जइ कारणेँ भोरेसँ लोकक बीच चुलबुली शुरू भेल। जे-जे सुनै ओ कोनो-ने-कोनो रूपमे अप्पन पक्ष राखि पक्षपाती बनए लगल। जेठ मासमे जहिना कोनो साल सुखाएल धारमे बाढ़ि आबि माछक अमार लगबैए, तहिना गाममे भेल। गामक अधिकांश लोक घटनामे सम्मिलित भइये गेला। केतौ पाँचटा दसटा पुरुख एकठाम बैस तँ केतौ पाँचटा दसटा मौगी एकठाम बैस घटनाक समीक्षा करए लगलैथ। तहिना केतौ मौगी-पुरुख मिज्झर भऽ निराकरणमे लागल तँ केतौ लुल्हा-नेंगरा सेहो...। अपने दरबज्जापर बैस हिऐबते रही कि जे चाह पीबैले कोन चौक दिस जाएब नीक हएत। ऐठाम चाह पीबैक बहानासँ गामक समाचार जानब अछि। गाममे दस-पाँच दोकानक चौक-चौराहा बनियेँ गेल अछि। गामक लोकमे जे जेहेन शिकारी से तेहेन समाचार एकत्रित करिते छैथ। कहब जे समाचार तँ समाचार छी जे कोनो चौक-चौराहाक किए ने होउ तइमे फेड़-बदल की हएत.? हेबे करैए, किएक तँ अनेको रूपमे प्रमुख रूपसँ कोनो घटनाक तीन रूप चौक-चौराहापर अबैए। एक चौकक रूप घटनाक पक्षमे होइए तँ दोसर चौकक रूपक आवाज विपक्षमे होइते अछि। तहिना तेसर चौकक विचार मिलल-जुलल सेहो होइते अछि। माने, की गलती आ की सही।

पत्नी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचबे केलीह कि रस्तापर भोगीलालकेँ अबैत देखलिऐ। मनमे ठहैक गेल जे हालक सभ

समाचारक भाँज नीक जकाँ लगि जाएत। ओना, भोगीलालक बेवहार अपना संग कहियो अधला नहि रहल अछि, जेना लोकक मुहसँ सुनै छी। तेकर कारणो अछि जे अप्पन जीवनक असारे-पसार कम अछि, तँए बेसी लोकक खगता नहियेँ होइए जइसँ लोककेँ चिन्हैक अवसर भेटत। मुदा एते तँ कानसँ सुनबे करै छी जे गाममे भोगीलाल सन धुरफन्ना लोक दोसर नहि अछि। की धुरफन्ना अछि आ लोक की धुरफन्ना बुझै छैथ से तँ गामक साढ़े पाँच हजार लोकक मन जनतैन मुदा अपना मनमे से सभ किछु ने अछि। लोको तँ लोक छीहे, केतौ कोनो घटनाक जँ पक्षकार होइ छैथ तँ सुन्नर-सुडौल शब्दमे बजै छैथ आ केतौ घटनाक विपक्षकार रहल तँ चिक्कन-चुनमुन शब्दमे बजिते छैथ। खाएर जे छैथ, ओ गाम-गामक लोक अप्पन-अप्पन गाम-समाजक बात बुझता।

भोगीलालकेँ देखि पत्नीकेँ कहलयैन- “एक गिलास चाह आरो नेने आउ।”

चाह आनए पत्नी आँगन दिस बढ़ली आ अपने भोगीलाल दिस देखैत बजलौं- “भोगीलाल, तूँ बहुत दिन जीबह।”

जहिना कोनो रचनाकारक रचित विचार बेर-बेर दोसराक मुहसँ निकलने आयुमे वृद्धि होइ छैन तहिना ठिकियाकऽ भोगीलालकेँ देखि बाजल छेलौं। मुदा भोगीलाल तँ भोगीएलाल छी, करखन भोगीलाल बनल रहत आ करखन जोगीलाल बनि जाएत, तेकरो कोनो ठेकान नहियेँ अछि। ..जहिना बजलौं तहिना ठोराहि मौगी जकाँ, माने बिनु सोचने-विचारने कोनो प्रश्नक उत्तर दइबाली, जिनका दोसर रूपमे ‘ठोरेपर बरी पकबैवाली’ सेहो कहल जाइ छैन, तहिना भोगीलाल बाजल- “काका, अहाँ सबहक आसीरवादसँ ने जीबो करै छी आ जीबो करब।”

तैबीच पत्नियोँ चाह नेने आँगनसँ पहुँचली आ भोगीलाल सेहो

दरबज्जापर आबि बैसल। पत्नीकेँ रौतुका घटनाक भनक लागि गेल रहैन। अँगने बाहरैकाल मनमोहनवाली भौजी कनफुसकी कहि देने छेलखिन जे केतौ बाजब नहि। तँए पत्नी हमरोसँ छिपाइये कऽ रखने छेली। बजली नहि। पति-पत्नीक बीच सेहो बिचौलिया प्रबल अछिए। जहिना कारोबार करैत एजेन्ट सभ करैए। सुधंग स्त्रीगणकेँ पोल्हा बजैए जे पाइ-कौड़ीक मामला छी, केतौ बाजब नहि, आ कनतोरीमे राखल गहना-जेबर ठकि लइए।

पत्नीक हाथमे चाह देखिते भोगीलाल बाजल-

"भाय साहैब, भरि राति जगले छी।"

जहिना भोगीलाल बाजल तहिना अपनो बजलौं-

"चाह पीब लएह, नीनक भक टुटि जेतह। तखन गाम-घरक गप-सप्प करब।"

ओना, अनका लगमे भोगीलाल जेहेन सरपट मुँह खोलैए तेना अपना लगमे नहि खोलैए मुदा सरपट ढोलक बजौनिहारक हाथ जहिना कखनो-कखनो बहैक जाइ छै, तहिना सरपट बजनिहारक मुँह सेहो बहैक जेबे करै छइ। ..भोगीलाल बाजल-

"भाय साहैब, गाम-घरक गप अथाह अछि। केकर मजाल छी जे गाम-घरक थाह पौत।"

भोगीलालक विचार किछु सोहंतगर सेहो लगल आ किछु अनसोहंतगर सेहो लगबे कएल। पुछलिऐ-

"से की भोगी?"

आदरपूर्वक किनकोसँ कोनो विचार पुछलापर जहिना मान-अपमानक विचार मनमे जगिये जाइ छैन, तहिना भोगीलालकेँ सेहो भेल। तैबीच गिलासक आधासँ बेसी चाह पीब नेने छल। भोगीलाल बाजल- "भाय साहैब, अखन गाममे एकटा नव घटना घटि गेल अछि,

तँए गामक जड़िक चर्च अखन नइ करब। मुदा संक्षेपमे तँ एते कहिये देब जे कोनो गाममे केते रंगक माटि अछि, केते रंगक पानि अछि, केते रंगक गाछ-बिरीछक संग अन्न-पानिक उपजो-बारी आ उपजौनिहारो केते रंगक छैथ से थाह लगाएब असान थोड़े अछि.!"

भोगीलालक तथ्यपूर्ण विचार अपनो मनमे ठहकल। ठहैकते बजलौं-

"अखन पुरना गप-सप्प छोड़ह। हालक जे हालत अछि तेतबे गप करह।"

भोगीलाल बाजल-

"भाय साहैब, काल्हिसँ आइ धरिक जे घटना अछि अखन तेतबे कहै छी।"

अपनो नीक बुझि पड़ल। अनेरे अठारहो पुराणक चारि लाख मंत्र–श्लोक–पढ़ै पाछू जे अप्पन अस्सी बर्खक उमेर खपा लेब आ पाएब किछु ने, तइसँ नीक ने जे वेदक एक्के लाख मंत्रकेँ जपैत पाँच लाख मंत्रक भोग भोगि लेब। तेकर माने ई नइ बुझब जे वेदक मंत्र मनुक्खक वृद्धि–विकास–क संग-संग चलबो करैए, निरमैबतो अछि आ पैछलाकेँ छोड़ितो तँ अछिए। ..बजलौं-

"अपना जे नीक बुझि पड़ह, सएह बाजह।"

अपन दशा-दिशा व्यक्त करैत भोगीलाल बाजल-

"भाय साहैब, की कहब। दिन-राति जइ समाजक पाछू, माने गामक समाजक पाछू, समय खपबै छी सएह समाज धुरफन्ना लोक बुझैए।"

'धुरफन्ना' शब्द तँ बहुत दिनसँ सुनैत आबि रहल छी मुदा गुनलौं कहियो ने, तँए धुरफन्नाक वास्तविक रूप अखन तक नहियेँ बुझिमे आबि सकल अछि। बजलौं- "की धुरफन्ना भोगी?"

भोगीलाल बाजल- “भाय साहैब, पाणिनि व्याकरण तँ नहि पढ़ने छी जे ध्वनिक आधारपर बाजब, मुदा गामक लोक जेना बेवहारमे बजै छैथ तेना कहै छी।”

बजलौं-

“हँ, सएह कहह?”

भोगीलाल बाजल-

“धुरफन्ना लोकक माने भेल जे जहिना समाजमे किछु एहेन लोक होइ छैथ जे सामाजिक बन्धनक रास्ताक विचारकेँ नहि मानि, सीमाक उल्लंघन करै छैथ तहिना खेतक आड़ि-धुरकेँ माने खेतक सीमा-सरहदकेँ नहि मानि कुदिकऽ टपैबला सेहो छैथ, वएह ने भेला धुरफन्ना लोक।”

भोगीलालक विचार मनमे नीक जकाँ जँचल कि नहि से धड़फड़मे विचार नहि कऽ सकलौं मुदा एते तँ मुहसँ निकैलिये गेल-

“हँ, से तँ सएह ने भेल।”

समर्थन पेब आकि मनक उदवेगमे भोगीलाल बाजल-

“भाय साहैब, अखन बीतल दिनक घटनाकेँ बीर्तमान नहि बीतल–मरल–मानि छोड़ि दइ छी, कौल्हुका जे दिन-रातिक अछि तेतबे कहै छी।”

भोगीलालक विचार अपनो नीक बुझि पड़ल। बजलौं-

“कौल्हुके दिनपर ने औझुका दिन ठाढ़ हएत, तँए कल्हुके भरिक कहह।”

भोगीलालक मन मानि गेल जे बेसी-दिनक ऐगला-पैछला विचारमे ने कम-बेसी होइए मुदा टटकामे तँ से नइ हएत। भोगीलाल बाजल- “भाय साहैब, काल्हि दूटा घटना भेल, दिनक घटना

बेकतीगत रूपक छल तँए ई पाछू-के कहब मुदा रौतुका जे भेल से पहिने कहै छी।"

बातकेँ बतंगर होइसँ रोकैत बजलौं-

"हँ, सएह कहह।"

भोगीलाल बाजल-

"गाम-समाजमे आइये नहि, सभ दिनसँ उपद्रवी तत्त्व रहल अछि से तँ बुझिते छी, आ ईहो तँ बुझिते छी जे अप्पन गाम किसानक गाम छी।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ, से तँ छीहे.!"

भोगीलाल बाजल-

"उपद्रवी तत्त्व अनेको रंगक अछि।"

अखन तक अपने साँढ़े-पाड़ाक उपद्रव जे खेत-पथारमे होइए, तेतबेकेँ उपद्रव बुझै छी मुदा भोगीलाल अनेको रंगक कहैए, तँए जिज्ञासा जगबे कएल। पुछलिऐ-

"से केना भोगी?"

भोगीलाल बाजल-

"भाय साहैब, सोलहआना उपद्रवमे दूअना भगवानक छैन, बाँकीमे दसअना लोकक अछि आ चारिअना कीट-पतंग-सँ-जानवर धरिक अछि।"

भोगीलालक विचार सुनि मने-मन विचारए लगलौं तँ बुझि पड़ए लगल जे भोगीलाल ठीके कहैए। बजलौं-

"कनी बिकछा कऽ भोगी बाजह।"

जेना कोनो गम्भीर विषयकेँ चिन्तक क्रमानुसार व्याख्या करै

छैथ तहिना भोगीलाल बाजल-

“भाय साहैब, भगवानक दोख दूअना ई छैन जे कहियो काल नमहर भुमकम कऽ दइ छैथ तँ कहियो मेघ फारि बेसी बरखा दइ छैथ, कहियो शीतक मासमे शीतलरीए कऽ दइ छैथ।”

भोगीलालक विचार मनमे ठहकल। ठहैकते बजलौं-

“हँ से तँ कइये दइ छैथ।”

शतरंजक गोटी जकाँ भोगीलालकेँ जेना सह भेटल तहिना बाजल-

“भाय साहैब, उपद्रवी रहितो भगवान इमानदार तँ छथिए। तँए अपन इमान बँचबैत कोनो काज करै छैथ। लोक जकाँ ने राति-के चोराकऽ केकरो घरक वौसे–वस्तु–चोरबै छैथ आ ने केकरो खेतमे लगल जजाते काटै छैथ।”

भोगीलालक विचार सुनि मनमे हँसियो लगि रहल छल जे जइ भोगीलालकेँ समाजक लोक धुरफन्ना बुझै छैथ, माने जेकरा अप्पन कोनो ठेकान नै छै, सएह भगवानकेँ कठघरामे ठाढ़ कऽ दोख-निरदोख देखा रहल अछि। बजलौं-

“भोगी, भगवानक लीला अपरमपार भेलै, तँए हुनकर गप छोड़ह।”

भोगीलालक वौआइत मनमे जेना उगरास भेल, तहिना बाजल-

“भाय साहैब, पैछला उपद्रवक चर्च अखन नइ करब किएक तँ ओ बीतल दिनक बीतल समाजक विषय भेल। अखन अखुनका सुनू। आइ अपने गामटा मे नहि, गाम-गाममे पोसुओ सुगर आ बोनैयो सुगरक बढ़वारि भेने किसान सभकेँ नमहर परेशानीक मुकाबला करए पड़ि रहल छैन।”

भोगीलालक विचार सुनि अपनो मनमे अनुमानसँ ठहकल जे

भरिसक रौतुको घटना एहने सन अछि। ..बजलौं- “की परेशानी भोगी?”

भोगीलाल बाजल-

“रातिमे एगारहटा सुगर कोबी खेतमे पड़ले रहि गेल।”

बुझल रहैत तखन ने, से तँ बुझल छल नहि। पुछलिऐ-

“की पड़ले रहि गेल?”

भोगीलाल बाजल-

“भाय साहैब, गम्भीर संकट, गम्भीर विषय बनि गाम-समाजमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। खासकऽ किसानक संग तँ आरो गम्भीर स्थिति बनि गेल छैन।”

बजलौं-

“से एहेन संकट, माने नै बुझलौं जे केना भेल अछि?”

भोगीलाल बाजल-

“भाय साहैब, समय एहेन मोड़पर आबि गेल अछि जे लोक मने-मन केंकिया रहल अछि, मुदा डरे मुँह खोलि कियो बाजि नहि पेब रहल अछि।”

भोगीलालक विचार सुनि मनमे भेल जँ भोगीलालकेँ सह दैत दोहराकऽ पुछब तँ गप-सप्पक क्षेत्रे बदैल जाएत। तँए पैछला विचारकेँ जगबैत बजलौं-

“भोगी, अखन दोसर-तेसर विचार छोड़ह। जे गप-सप्प शुरू केने छेलौं, बस तेतबेक विचार करह।”

भोगीलाल बाजल-

“भाय साहैब, कौल्हुका काजक चिन्ताक सोगसँ रातिमे नीन नहि भेल, तँए तरगरे बिछान छोड़ि टहलए लगलौं। दच्छिनवारि टोलक

मकशूदन काका चौराहापर भेटला। वएह कहलैन जे खेत-पथारसँ बाड़ी-झाड़ी धरिमे सुगरक तेते उपद्रव बढ़ि गेल अछि जे किसानी जीवने मरि रहल अछि। तँए एहेन परिस्थितिमे जँ अप्पन रक्षा अपने नइ करब, तखन जीवन केना बँचत। कोबीकेँ नाश करै दुआरे रक्षार्थ जहर छीट देलिऐ। सुतली रातिमे सुगर-सभ आबि खाए लगल। खाइते-खाइते एगारहो टा सुगर खेतेमे सुतल अछि।"

बजलौं-

"जे समाचार सुनैले अखन तक मन खोजि रहल छल से भेट गेल। आब अप्पन समाचार कहह?"

भोगीलाल बाजल- "भाय साहैब, गामोक लोक जनैए आ अहूँ तँ जनिते छी जे गीत-भजन गबैसँ नीक हमर मन ठेकौती करैमे लगैए, तँए अखन तक ढोलक बजाएब छोड़ि दोसर साज-बाजपर हाथ नहि देलौं अछि। महीना दिनसँ रेडियो स्टेशनसँ प्रचार होइत आब रहल अछि जे ठेका बजौनिहारक बहाली हएत।"

अपनो रेडियोमे महीना दिनसँ सुनिते आबि रहल छी जे ढोलक बजौनिहारक बहाली रेडियो स्टेशनमे हएत। तँए बजलौं-

"कौल्हुके दिन ने बहालीक छल, से की भेल?"

भोगीलाल बाजल-

"की हएत, दैवक कपार.!"

भोगीलालक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। जिज्ञासा करैत बजलौं-

"कनी फरिछा कऽ कहह।"

भोगीलालक आशापर जेना पानि हेरा गेल होइ तहिना तुरैछ कऽ बाजल- "भाय साहैब, रेडियो स्टेशनमे मुँह देख मूँगबा परसल जाइए। अप्पन मुँह ओहन थोड़े अछि जे मूंगबा भेटत।"

ओना, भोगीलालक चरित्रसँ, बेकतीगत आचरणसँ क्षुब्ध जरूर छी, किएक तँ कोनो ठेकनगर कर्मक लोक नहि अछि, मुदा एते तँ गुण छइहे जे सामाजिक कोनो काज किए ने हुअ, भोगीलालक भागीदारी ओइमे रहिते छै। ओना, जीवन सभक अप्पन-अप्पन छी, जे आगू बढ़ि, विकसित होइत समाजिक जीवनमे प्रवेश करैए, मुदा बनल-बनाएल जे अखन तकक समाज अछि ओहो बहुरूपिया भइये गेल अछि। ..बजलौं-

"की मुँह देखि मूँगबा, भोगी?"

भोगीलाल बाजल-

"अपने गमैया लोक छी। अपना सबहक समाजमे फगुओ ने शास्त्रीय उत्सव छी। ओइ उत्सवकेँ मनबैमे महीना दिन समाजमे जोगिरा-फगुआ चलिते अछि आ चैतावर शुरू करैत विसर्जन होइए।"

अखन तकक देखल बेवहार समाजक अछिए। सोझा-सोझी केना नठब[3]।

बजलौं-

"हँ, से तँ अछिए।"

भोगीलालकेँ जेना अप्पन गुण गौरवान्वित केलक तहिना बाजल-

"भाय साहैब, अपना सभक समाजक शास्त्रीय धुन, रेडियो स्टेशनक शास्त्रीय धुन थोड़े छी। इन्टरभ्यूमे 'राग तोड़ी' धुनमे ढोलक बजबए कहलक। तहीमे छँटनी भऽ गेल।"

ओना, भोगीलालक विचार सुनि मने-मन हँसियो लगै छल, मुदा केकरो चूकपर जँ हँसि देब तँ ओ अचूक भइये जाइए, तँए किछु ने

---

[3] **मुकड़ब**

बजलौं।

कनीकाल रहि भोगीलाले बाजल- “भाय साहैब, संगे-संग दुनू भाँइ चलू एकबेर गामोक हवा-पानि लगा आबी।”

अपनो मन भेल जे एकबेर टहैल आबी मुदा भोगीलालक संग टहलब, मन नइ मानलक। बजलौं-

“भोगी, टहलैक मन अपनो होइए मुदा एकटा काज तेहेन बनरफाँस लगा देने अछि जे मने बेचैन अछि, की टहलब।”

❑

शब्द संख्या : 1891, तिथि : 10 मार्च 2023

घरदेखी

पौने नअ बजे रातिमे रामपुरसँ गाम आबि कलपर हाथ-पएर धोइ कऽ लोटामे पानि भरि, कोठरीमे आबि ओछाइन दिस देखलौं कि उत्तिमलाल भाय मनमे नाचि उठला। मनक नाचकेँ मनेमे दाबि ओछाइन झाड़िकऽ बिछेलौं। मनसँ उत्तिमलाल भाय उतरला तँ नहि मुदा मनमे नाचब कम भऽ गेल छल। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि, ओ अछि रामपुरक भैयारी, तीन कोस हटल गाम उत्तिमलाल भाइक छैन आ तहिना हुनकासँ हटल अपनो घर तँ अछिए, तैठाम भैयारीक सम्बन्ध केना भेल? ..ओना, मातृक वा कोनो आन सम्बन्धमे सेहो भैयारी होइते अछि, तइसँ भिन्न उत्तिमलाल भाइक संग अप्पन भैयारी अछि। नोकरीक जीवन रहने बहुत दिन धरि दुनू गोरे एकठाम रहबो कएल छी आ बेवहारिक जीवनमे एकरूपता सेहो अछिए जइसँ जीवनक अनेको मर्मस्थल दुनूक गोरेक एकरंगाहे अछि। हँ, ऐठाम समाज वा परिवारक बीच जे भैयारीक सम्बन्ध अछि ओ एकटा वंशगत अछि आ दोसर सम्बन्धगत अछि।

ओहुना देखिते छी जे अपना सबहक बीच जेतेक सम्बन्ध अछि ओ सीढ़ीनुमा अछि, वंशगत भैयारीक सम्बन्धमे सेहो थोड़-बहुत माने उम्रक चलैत सीढ़ीनुमा अछिए, मुदा से समाजगत भैयारीमे नहि अछि। परिवारमे 'भैया-बौआ'क चलैन अछि, मुदा समाजमे ओ 'भाए-भैयारी'क रूपमे बदैल जाइए, जे एकरूपताक रास्ता सेहो

पकड़ैबिते अछि। खाएर जे अछि ओ जानैथ परिवार-समाजक लोक। अपना तँ अप्पन जिनगी अछि। अपना देहमे ओहन बिमारीए ने भऽ जाए जे सदिकाल मन व्याकुले बनल रहए। तइले अपने ने विचारबो करब आ तेकर निमरजनो करब।

ओछाइन बीछा सिरमापर जहाँने मुड़ी देलौं कि उत्तिमलाल भाइक बेटी-बिआहक परेशानी धक-दे मनमे खसल। ओना, बिआहक सभ बेवस्था देखि मन मानि गेल अछि जे उत्तिमलाल भाय जीवनक अन्तिम बेड़ा नीक जकाँ पार कऽ रहला अछि। आजुक जे परिवेश बनि गेल अछि आ बनियोँ रहल अछि तइमे नहियेँ जाएब नीक, मुदा बाघा तँ ईहो अछिए जे जँ बिआहक काजकेँ वहिष्कार करब तखन बेटा-बेटीक बिआह केना हएत। आ जँ बिआह नइ हएत तँ परिवार बनि समाज ठाढ़ केना हएत?

बेटी बिआहक सभ प्रक्रिया उत्तिमलाल भाय जीह खोलि कऽ केने छैथ। आन गामक आन जातिक बात नइ कहै छी जे जाबे बर दुआरि नइ लगता ताबे जँ कियो बरात दरबज्जापर एबो करता तँ हुनका बरियातीक मोजर नइ हेतैन, तँए चाह-पानक कोन गप जे कियो कुशलो-क्षेम पुछनिहार नइ होइ छैन। तइसँ विपरीत उत्तिमलाल भाय ऐठाम देखलयैन। बर-बरियाती रातिक दस बजेक बाद पहुँचता, मुदा खेनाइ-पीनाइ दस बजे दिनेसँ शुरू भऽ गेल छल।

अप्पन समयक अँटावेश करैत सात बजे साँझमे उत्तिमलाल भाय ऐठाम पहुँच आँगन-सँ-दरबज्जा धरि घुमि-फिर कऽ सभ किछु देखि मन आश्वस्त भइये गेल जे उत्तिमलाल भाय सफल बेवस्था केने छैथ। सभ किछु देखि-सुनि उत्तिमलाल भायकेँ कहलयैन- “भाय, हम नइ रूकब। सभ किछु देखि-सुनि लेलौं, आब जेबाक आदेश दिअ।”

अपने ई सोचि बाजल रही जे उत्तिमलाल भाय अप्पन काजमे तेजी अनता, जइसँ काज आगू मुहेँ ससरैत बढ़तैन। जहिना अपने

बजलौं तहिना उत्तिमलाल भाय खाइ-पीबैक जगहपर हमरा पहुँचा कऽ कहि देलैन-

"भोजन केलाबाद अहाँ चलि जाएब।"

गाड़ी-सवारी बढ़ने, एते तँ भइये गेल अछि जे नमहरो राति छोट भऽ गेल अछि आ छोटो दिन नमहर भऽ गेल अछि, माने काज करैक समय बेसी भेने बढ़ि गेल अछि। बजलौं-

"उत्तिम भाय, घरदेखी बाँकी रहल।"

उत्तिमलाल भाय बजला-

"बड़बढ़ियाँ।"

सिनेमाक रील जकाँ अप्पन विचारक रील सेहो आगू मुहेँ बढ़ल। आगू बढ़िते उत्तिमलाल भाइक पाँच बर्खक परेशानी मोन पड़ि गेल।

कहनिहारो आ बजनिहारो कहिते छैथ आ बजिते छैथ जे बेटा-बेटीक बिआह एक निश्चित सीमापर होइ। मुदा चाहलाक पछातियो कान्ही मिलबैमे, माने बर-कन्याक जोड़ मिलबैमे बर्खक-बरख गुजैर जाइए, तखन निश्चित सीमाक निश्चित सिमान केना रहत। खाएर जे रहए, ऐठाम उत्तिमलाल भाइक चर्च करै छी।

आन गुण उत्तिमलाल भायमे जे होनु मुदा बेटा-बेटीकेँ पढ़बैक गुण हुनकामे सभ दिनेसँ अनका अपेक्षा बेसी छैन्हे। जइसँ तीनू बेटियो आ दुनू बेटोकेँ एक सीमा धरि पहुँचाइये चुकल छैथ। ऐठाम सीमाक माने एक खण्डक सीमा, ओना जैठाम माने जइ देशमे बेरोजगारीक बोझ रहत तैठाम पढ़ाइक डिग्रीक कोनो मोल नहियेँ रहैए, से अपनो ऐठाम अछिए। देखबे करै छी वैज्ञानिक बनैबला रेलबे स्टेशनमे टिकट काटै छैथ। जइसँ उत्तिमलाल भाय पाँचो सन्तानकेँ एक सिमानपर पहुँचेला पछातियो, काजक अभावमे नोकरी नइ भेने, परेशान छथिए। ओना, अपना नीक नोकरी रहने उत्तिमलाल भायकेँ

नीक पेंशनक आशा छैन्हे, मुदा उपभोक्ता समय भेने सभ वस्तुक पूर्ति नहियेँ कऽ पाबि रहला अछि।

अप्पन पहिल आ दोसर बेटीक बिआहमे तेना भऽ कऽ उत्तिमलाल भाय परेशान नइ भेला, तँए परेशानीक ओ गुण नहि भेटलैन जे तेसर बेटीक बिआहमे भेटलैन अछि। उत्तिमलाल भाइक अप्पन जेतेक सूत्र छेलैन, तइ सभ सूत्रक उपयोग अप्पन बेटीक बिआहमे केलाह, मुदा अनठिया साँपक काटल बीख जकाँ जे जनलाहा मंत्रसँ नइ उतरैए तहिना भइये गेल छेलैन। कहब जे अनठिया साँप आ जनलाहा मंत्र की भेल? अनठिया साँप भेल, नव-नव लेन-देनक चलैन आ सभ साँपक मंत्र अलग-अलग अछि, जइसँ एक मंत्र दोसर साँपक बीखकेँ नहि उताइर पबैए, तहिना समाजमे अनठिया साँपक प्रवेश भेइये गेल अछि जइसँ मनुक्खक कोनो पहचाने ने रहल अछि। सभरंगा खेल चलिये रहल अछि। केतौ कोनो गाम घेरल अछि जइसँ ओइ गाममे लोक अप्पन बेटा-बेटीक बिआह नहि करै छैथ, तँ दोसर दिस कूल-मूल सेहो अप्पन आड़ि बना घेरनहि अछि। मुदा मनुक्खो तँ मनुक्ख छी, जे अप्पन पूर्ण स्वतंत्रता उपयोग करैत जाति-क्षेत्रसँ लऽ कऽ कूल-मूलक आड़िकेँ तोड़ि वैवाहिक सम्बन्ध सेहो बनैबते छैथ। खाएर ई तँ भेल गाम-समाजक लीला, मुदा उत्तिमलाल भाइक लीला दोसर रंगक छैन, समाजक मध्यम वर्गमे, ऐठाम वर्ग आ स्तर दुनू अछि, उत्तिमलाल भाइक जन्म भेल छैन। समाजमे स्तरक एक चलैन धनोक अछि आ दोसर चलैन जातियोक अछि। जहिना धनीक, बहुत धनिक, तहूसँ बेसी धनिक आ तहूसँ बेसी धनिकक सीमा अछि, तहिना गरीबक बीच सेहो अछि। गरीब, बहुत गरीब, तहूसँ बेसी गरीब आ तहूसँ बेसी गरीब सेहो अछिए। तहिना शिक्षाक मदमे सेहो अछिए आ जातिक मदमे सेहो अछिए।

समाजक मध्यम वर्गक परिवार ओहन अछिए जे धनक जेते

खगता हेबा चाही, सेहो अछि आ जीवनक क्रमानुसार जे शिक्षाक स्तर हेबा चाही सेहो अछिए। जहिना धनक रूपमे उत्तिमलाल भाय छैथ तहिना शिक्षो आ जातियोक रूपमे छथिए। पनरह-बीस लाख रूपैआ बेटी बिआहमे खर्च करैक विचार केनहि छैथ, मुदा एहेन वर्गक परिवारमे शिक्षाकेँ पाछू पड़ने लड़का-लड़कीक जोड़मे भारी खाधि सेहो बनियेँ गेल अछि। ओना, अखन तक जे अपना समाजमे एहेन चलैन रहल अछि जे बेसियो पढ़ल-लिखल लड़काक बिआह साधारणो पढ़ल-लिखल वा नहियोँ पढ़ल-लिखल लड़कीक संग भइये रहल अछि। ओना, तहूमे विस्फोटक स्थिति बनने मंत्रवाहकेँ बीख उतारब कठिन भइये गेल छैन।

जहियासँ उत्तिमलाल भाय नोकरीसँ सेवा निवृत्त भेला तहियासँ भेँट-घाँट हएब कमियेँ गेल अछि। समय छल जखन साँझ-भोर एकाध घन्टा एकठाम बैस अप्पन-अप्पन जीवनक संग देश-दुनियाँक गप-सप्प सेहो करै छेलौं, तैठाम मासक-मास भेँट नइ होइ छैथ। छअ मास पूर्व जे भेँट भेल छला आ ओइ दिन जे हुनक रूप देखलयैन तँ बिसवासे ने भेल जे उत्तिमलाले भाय छैथ। एक तँ ओहुना हुनकर शरीरक रंग पीरसियाम छैन्हे, मुदा तोहूमे बेटी बिआहक चिन्ताक रंग आरो कारी-झामर बना देने छेलैन। तैसंग सुखल मुँह रहने चेहरोक रूप आ मनो मलिन भइये गेल छेलैन।

अन्तिम भेँट दिन, माने छअ मास पूर्व जे उत्तिमलाल भाय भेँट भेला आ पुछने रहिऐन- 'भाय, कन्यादानक की स्थिति अछि?' तैपर, एक तँ सोगाएल-पीताएल मन उत्तिमलाल भाइक भइये गेल छेलैन, बाजल छला- 'अखन किछु ने.!'

मनक टुटान एहेन होइते अछि जे टुटिकऽ ओइ सीमापर लटैक जाइए जेतए ग्रीनबीच रेखा अवस्थित अछि। ओइठाम लोक ओहिना लटैक जाइए जहिना महाभारतक अनेको याद्धाकेँ अर्जुन जे गरदैन

पकैड़ फेकलैन आ ओ जा कऽ जे लटकला। जेतएसँ ने केकरो निच्चाँ उतरल होइए आने ऊपर गेल होइए, तेहने सीमापर उत्तिमलाल भाइक मन, बुझि पड़ल जेना लसैक गेल छैन। तँए बिच्चेमे खरिआरिकऽ पुछलयैन-

"भाय, एना जँ परिवारसँ मुँह मोड़ब तँ रहब केतए.?"

जेहने अध्येता तेहने ध्याता उत्तिमलाल भाय सभ दिन रहला। दार्शनिक भावमे बजला-

"जिज्ञासु भाय! की कहब, किछु कहने किछु ने बनैए..!"

बजलौं-

"से की भाय?"

अलंकारिक शैलीमे उत्तिमलाल भाय बजला-

"परिवारक राग छुटने लोककेँ विराग होइए आ विरागसँ जखन अनुराग होइए तखन ने अनुरागसँ दुनियाँक प्रति राग अबैए। तखन अहीं कहू जे जइ परिवारसँ वा आने वस्तुक रागसँ विराग होइए तँ ओकरा की करबै?"

अपने तँ साधारण बी.ए. पास केने छी। तहूमे चुड़ा-दही-चिन्नी पढ़िकऽ, माने भेल साइक्लॉजी, लॉजिक आ मैथिली पढ़ल छी, तँए उत्तिमलाल भाइक विचारकेँ नहि पकैड़ मुँहछोहैन करैत बजलौं-

"भाय, आब ने ओ देवी रहल आ ने ओ कराह, तँए छोड़ू ओइ सभकेँ। कन्यादानक की स्थिति अछि?"

कारी घट-घटासँ बोझिल मेघमे एकाएक जहिना केतौ फाट एने सुर्जक प्रकाश प्रकाशित होइए तहिना उत्तिमलाल भाइक चेहरापर इजोत छिटकलैन। जइसँ कलियाएल फूलक कोढ़ी जकाँ एकाएक उत्तिमलाल भाइक मुँहक सुरखीक रंग उतरए लगलैन। बजला- "भाय, विचित्र बनरफाँसमे पड़ि गेल छी। रावणक दरबारमे जहिना हनुमानकेँ

फाँस लगा आनल गेल रहैन तहिना लगैए अपनो संग भऽ गेल अछि.!”

पुछलयैन-

“से की भाय?”

उत्तिमलाल भाय बजला-

“अप्पन जे जातिक समाज अछि तइमे अपना गाममे तँ अपनेटा आ आन गाम बहुत एहेन अछि जइ गाममे हमरा बेटी एतेक पढ़ल-लिखल नहि अछि, तैठाम अहीं कहू जे हम्मर बेटी एक नम्बर भेल की नहि?”

उत्तिमलाल भाइक दमगर विचार सुनि केना कहितिऐन जे अखन तक अहाँक रूआब कम नहि भेल अछि, बजलौं-

“एकरा के काटत।”

हम्मर विचार सुनि उत्तिमलाल भायकेँ जेना सह भेटलैन तहिना बजला-

“एकठाम लड़काक भाँज लगिते, काजक विचारकेँ आगू बढ़ेलौं। देखिते छी जे डॉक्टर लड़काक मांग डॉक्टर लड़कीक परिवारमे केहेन भऽ रहल अछि। शिक्षक-किरानीक तँ विचार छोड़ू, वेचारेकेँ दरमहो कम छैन आ भनसियो सब दिन रोगाएले रहै छैन।”

हमर विचारक प्रभावसँ आकि अप्पन मनक उत्साहसँ, से उत्तिमलाल भाय अपने जनता, मुदा मन्हुआएल मने बजला-

“भाय, एकठाम लड़काक सूहकार भेटल। एकटा संगीक संग ओइठाम गेलौं।”

कहि उत्तिमलाल भाय एकाएक ओहन चरिचकिया गाड़ी जकाँ जे पेट्रोल वा डीजल सठने रूकिकऽ ठमैक जाइए तहिना रूकि गेल। बजलौं- “भाय! अखन हमहूँ निचेने छी, तँए कोनो विचारकेँ राखू

नहि।”

हम्मर बात सुनिते हूबा करैत उत्तिमलाल भाय बजला-

“भाय, समाज निरलज भऽ गेल अछि, एक दिस कन्याकेँ दान स्वरूप मानैए आ दोसर दिस कन्याकेँ मनुक्खक श्रेणीसँ निच्चाँ उतारि देने अछि.!”

उत्तिमलाल भाइक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं, तँए पुछलयैन-

“से केना भाय?”

खिसियाएल बिलाड़ जकाँ धुर-खुर नोचैत उत्तिमलाल भाय बजला-

“कहू जे जइ बेटीकेँ माता-पिता जन्मसँ जवान होइ तक पालि-पोसिकऽ दान करैए, तैठाम लोकक मन एतबो नइ मानैए जे कि भरि-भरि दिन नैतिकताक रट लगबैए। तेहेन लगौनिहारक नैतिकता केतए अछि।”

बजलौं-

“से की भाय?”

उत्तिमलाल भाय बजला-

“नैतिकताक सम्बन्धमे अखन एतबे कहब जे नैतिकता जीवनक अमूल्य रत्न छी। कहियो दोसर दिन आगूक चर्च करब जे नैतिकता की छी।”

उत्तिमलाल भाइक विचार सुनि अपनो मन मानि गेल जे अखन कन्यादान सन विषयपर विचार कऽ रहलौं हेन, तखन दोसर विचारक भूमियो तँ नहियेँ अछि। बजलौं-

“अखन छोड़ू दुनियाँदारीक गप-सप्प, ठनका ठनकै छै तँ कियो

अपना मथ्थापर हाथ दइए। गपकेँ आगू बढ़ाउ।”

उत्तिमलाल भाय बजला-

“जखन दुनू समांग बैस कऽ बेटी-बिआहक चर्च उठेलौं कि बरक बाप सुहरदे मुहेँ कहि देलैन, ‘अहाँ ऐठाम कुटुमैती नइ करब’। अपने तँ चुपे रहलौं मुदा संगी पुछि देलकैन, ‘किए ने करब?’ तैपर ओ बजला, ‘बेटी कारी छैन’। मन तँ तेते गरमा गेल जे मुँहमे पाँच थापर लगाबी, मुदा चुप-चाप उठिकऽ विदा भऽ गेलौं।”

नीनक आगमन भऽ गेल, तँए विचारक वातावरणमे नरमी आएल। ओना, समाधिक अवस्था तँ एकरा नइ कहबै जे चेतनताक पराकाष्ठा छी, मुदा एक मौसमसँ दोसर मौसमक बीच किछु-ने-किछु सुहावन वातावरण भइये जाइए, तइ अवस्थामे आबि गेल रही। एकाएक मनमे उठल, आइ उत्तिमलाल भाय गंगा लाभ भऽ रहला अछि। पाँचम दिन हुनका ऐठाम जाएब। तैबीच ओ अप्पन सभ काज, माने बिआहक काज सम्हारि लेने रहता। अपनो तँ किछु दायित्व बनिते अछि किने जे आजुक जे बिआह-दानक परिवेश बनि गेल अछि तइ अनुकूल घर देखब सेहो अछि ने। अखन तकक जे परिवारक ढाँचा अछि आ नव परिवेशमे जे ढाँचा बनत, दुनूक बीच सामंजस हएब जरूरी अछिए।

तैबीच तेसर बेर हाफी भऽ चुकल छल। चेतन क्रिया धीरे-धीरे शान्त होइत-होइत तेतेक निच्चाँ उतैर गेल जे कखन नीन आबि गेल से बुझबे ने केलाह।

❑

शब्द संख्या : 1846, तिथि : 14 मार्च 2023

❑❑❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक

नियमित गद्य लेखन

(14 मार्च 2014 सँ 14 मार्च 2023 इस्वी धरि...)

---

427. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014
428. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014
429. भोँटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014
430. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014
431. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014
432. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014
433. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014
434. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014
435. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014
436. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014
437. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014
438. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014
439. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014
440. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014
441. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014
442. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014
443. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014
444. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014
445. अवाक- शब्द संख्या : 1041, तिथि : 17 मई 2014
446. पोखैरक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014

447. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014
448. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014
449. पल भरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014
450. किरदानी- शब्द संख्या : 5309, तिथि : 14 जून 2014
451. सगहा- शब्द संख्या : 2860, तिथि : 22 जून 2014
452. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जून 2014
453. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जून 2014
454. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014
455. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014
456. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014
457. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014
458. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014
459. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014
460. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014
461. मरूभूमि- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014
462. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014
463. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014
464. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014
465. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014
466. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014
467. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014
468. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014
469. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014
470. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014
471. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014
472. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014
473. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014
474. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014

475. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014

476. मनकमना- शब्द संख्या : 6110, तिथि : 19 सितम्बर 2014

477. घरवास- शब्द संख्या : 4879, तिथि : 26 सितम्बर 2014

478. समधीन- शब्द संख्या : 6098, तिथि : 04 अक्टूबर 2014

479. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टूबर 2014

480. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टूबर 2014

481. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टूबर 2014

482. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20 अक्टूबर 2014

483. जितिया पाबैन- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टूबर 2014

484. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टूबर 2014

485. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014

486. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3335, तिथि : 13 नवम्बर 2014

487. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2887, तिथि : 17 नवम्बर 2014

488. खटहा आम- शब्द संख्या : 3515, तिथि : 22 नवम्बर 2014

489. ढकरपेँच- शब्द संख्या : 3759, तिथि : 30 नवम्बर 2014

490. असहाज- शब्द संख्या : 2865, तिथि : 04 दिसम्बर 2014

491. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3853, तिथि : 07 दिसम्बर 2014

492. विदाइ- शब्द संख्या : 5131, तिथि : 17 दिसम्बर 2014

493. खलओदार- शब्द संख्या : 735, तिथि : 19 दिसम्बर 2014

494. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1027, तिथि : 22 दिसम्बर 2014

495. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014

496. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015

497. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015

498. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015

499. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015

500. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015

501. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015

502. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015

503. उकड़ू समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015
504. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015
505. चौरचनक दही- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 31 जनवरी 2015
506. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 3 फरवरी 2015
507. टुटली मरैया- शब्द संख्या : 1951, तिथि : 7 फरवरी 2015
508. हकार- तिथि : 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या : 1911
509. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या : 1908, तिथि : 15 फरवरी 2015
510. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या : 2129, तिथि : 20 फरवरी 2015
511. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या:1996, तिथि : 23 फरवरी 2015
512. लेहाज- शब्द संख्या : 1906, तिथि : 26 फरवरी 2015
513. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या : 1917, तिथि : 1 मार्च 2015
514. ओ दिन- शब्द संख्या : 1782, तिथि : 4 मार्च 2015
515. उरीन- शब्द संख्या : 3235, तिथि : 8 मार्च 2015
516. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015
517. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015
518. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015
519. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015
520. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015
521. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015
522. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015
523. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015
524. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015
525. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015
526. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015
527. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015
528. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015
529. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015
530. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015

531. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015

532. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015

533. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015

534. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015

535. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015

536. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015

537. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015

538. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015

539. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015

540. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015

541. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015

542. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015

543. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015

544. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015

545. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015

546. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015

547. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015

548. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015

549. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015

550. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015

551. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015

552. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015

553. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015

554. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015

555. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015

556. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015

557. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015

558. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015

559. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015

560. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015

561. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015

562. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015

563. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015

564. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015

565. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015

566. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015

567. ठूठ गाछ- एक : शब्द संख्या : 1790, तिथि : 25 अक्टुबर 2015

568. ठूठ गाछ- दू : शब्द संख्या : 1203, तिथि : 29 अक्टुबर 2015

569. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्बर 2015

570. ठूठ गाछ- तीन : शब्द संख्या : 999, तिथि : 04 नवम्बर 2015

571. ठूठ गाछ- चारि : शब्द संख्या : 1494, तिथि : 07 नवम्बर 2015

572. ठूठ गाछ- पाँच : शब्द संख्या : 2363, तिथि : 12 नवम्बर 2015

573. ठूठ गाछ- छह : शब्द संख्या : 1539, तिथि : 17 नवम्बर 2015

574. ठूठ गाछ- सात : शब्द संख्या : 3232, तिथि : 23 नवम्बर 2015

575. ठूठ गाछ- आठ : शब्द संख्या : 2780, तिथि : 01 दिसम्बर 2015

576. ठूठ गाछ- नअ 'क' : शब्द संख्या : 2091, तिथि : 06 दिसम्बर 2015

577. ठूठ गाछ- नअ 'ख' : शब्द संख्या : 1083, तिथि : 08 दिसम्बर 2015

578. ठूठ गाछ- नअ 'ग' : शब्द संख्या : 1296, तिथि : 10 दिसम्बर 2015

579. ठूठ गाछ, दस- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 16 दिसम्बर 2015

580. प्रीगर शत्रु- शब्द संख्या : 1087, तिथि : 26 दिसम्बर 2015

581. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015

582. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2616, तिथि : 4 जनवरी 2016

583. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2516, तिथि : 10 जनवरी 2016

584. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3371, तिथि : 16 जनवरी 2016

585. माइक वचन- शब्द संख्या : 2999, तिथि : 21 जनवरी 2016

586. पान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 26 जनवरी 2016

587. आजुक जिनगीक आइ परीक्षा- शब्द : 1676, तिथि : 01 फरवरी 2016

588. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016

589. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016

590. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016

591. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016

592. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016

593. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016

594. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016

595. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016

596. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016

597. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016

598. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016

599. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016

600. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016

601. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016

602. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016

603. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016

604. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016

605. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016

606. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016

607. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016

608. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016

609. गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016

610. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016

611. आब नइ आगि लगैए- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016

612. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016

613. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016

614. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016

615. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016

616. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016

617. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016

618. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016

619. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016

620. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016

621. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016

622. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016

623. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016

624. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016

625. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016

626. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016

627. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016

628. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टूबर 2016

629. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टूबर 2016

630. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टूबर 2016

631. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016

632. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016

633. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016

634. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016

635. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016

636. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016

637. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016

638. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016

639. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016

640. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016

641. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016

642. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016

643. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016

644. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017

645. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017

646. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017

647. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017

648. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017

649. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017

650. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017

651. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017

652. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017

653. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017

654. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017

655. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017

656. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017

657. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017

658. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017

659. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017

660. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017

661. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017

662. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017

663. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017

664. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017

665. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017

666. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017

667. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017

668. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017

669. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017

670. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017

671. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017
672. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाई 2017
673. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाई 2017
674. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाई 2017
675. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाई 2017
676. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाई 2017
677. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017
678. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017
679. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017
680. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017
681. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017
682. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017
683. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- एक : श. सं.: 1630, तिथि : 14 सितम्बर 2017
684. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- दू : श. सं.: 2878, 18 सितम्बर 2017
685. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- तीन : श. सं.: 2318, 22 सितम्बर 2017
686. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- चारि : श. सं.: 2239, 26 सितम्बर 2017
687. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- पाँच : श. सं.: 1903, 29 सितम्बर 2017
688. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- छह : श. सं.: 2450, 03 अक्टुबर 2017
689. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- सात : श. सं.: 2040, 07 अक्टुबर 2017
690. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- आठ : श. सं.: 2403, 12 अक्टुबर 2017
691. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- नअ : श. सं.: 5046, 19 अक्टुबर 2017
692. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- दस : श. सं.: 794, 19 अक्टुबर 2017
693. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टूबर 2017
694. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टूबर 2017
695. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017
696. लहसन- एक : शब्द संख्या : 3169, तिथि : 10 नवम्बर 2017
697. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 12 नवम्बर 2017
698. लहसन- दू : शब्द संख्या : 2031, तिथि : 17 नवम्बर 2017

699. महिरम- शब्द संख्या : 1984, तिथि : 20 नवम्बर 2017

700. लहसन- तीन : शब्द संख्या : 2592, तिथि : 25 नवम्बर 2017

701. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या : 2726, तिथि : 29 नवम्बर 2017

702. लहसन- चारि : शब्द संख्या : 2562, तिथि : 4 दिसम्बर 2017

703. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या : 2722, तिथि : 10 दिसम्बर 2017

704. दोहरी हाक- शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017

705. लहसन- पाँच : शब्द संख्या : 4691, तिथि : 30 दिसम्बर 2017

706. पाइक इज्जत- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 05 जनवरी 2018

707. सेहन्ता- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 11 जनवरी 2018

708. राक्षसक झड़- शब्द संख्या : 1649, तिथि : 15 जनवरी 2018

709. बेरपर- शब्द संख्या : 2585, तिथि : 19 जनवरी 2018

710. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या : 2649, तिथि : 23 जनवरी 2018

711. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018

712. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या : 3089, तिथि : 3 फरवरी 2018

713. अब-तब- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 7 फरवरी 2018

714. अगिलह- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 11 फरवरी 2018

715. लहसन- छह : शब्द संख्या : 2240, तिथि : 15 फरवरी 2018

716. लहसन- सात : शब्द संख्या : 1026, तिथि : 18 फरवरी 2018

717. लहसन- आठ : शब्द संख्या : 2220, तिथि : 22 फरवरी 2018

718. लहसन- नअ : शब्द संख्या : 2015, तिथि : 25 फरवरी 2018

719. कुकुरपन- शब्द संख्या : 2229, तिथि : 28 फरवरी 2018

720. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या : 3107, तिथि : 5 मार्च 2018

721. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या : 2447, तिथि : 9 मार्च 2018

722. देखल दिन- शब्द संख्या : 2592, तिथि : 27 मार्च 2018

723. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या : 1905, तिथि : 30 मार्च 2018

724. संकट- शब्द संख्या : 2595, तिथि : 4 अप्रैल 2018

725. एकतीस मार्च- शब्द संख्या : 2814, तिथि : 10 अप्रैल 2018

726. गेल माघ उनतीस दिन बाँकी- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 15 अप्रैल 2018

727. बापक चलैत- शब्द संख्या : 2606, तिथि : 20 अप्रैल 2018

728. बेटाक चलैत- शब्द संख्या : 2889, तिथि : 25 अप्रैल 2018

729. प्रवल इच्छा- शब्द संख्या : 2301, तिथि : 30 अप्रैल 2018

730. पंगु- एक : शब्द संख्या : 6478, तिथि : 11 मई 2018

731. पंगु- दू : शब्द संख्या : 2156, तिथि : 15 मई 2018

732. पंगु- तीन : शब्द संख्या : 2092, तिथि : 21 मई 2018

733. पंगु- चारि : शब्द संख्या : 2177, तिथि : 24 मई 2018

734. पंगु- पाँच : शब्द संख्या : 2492, तिथि : 27 मई 2018

735. पंगु- छह : शब्द संख्या : 1853, तिथि : 30 मई 2018

736. पंगु- सात : शब्द संख्या : 911, तिथि : 02 जून 2018

737. पंगु- आठ : शब्द संख्या : 1945, तिथि : 4 जून 2018

738. पंगु- नअ : शब्द संख्या : 935, तिथि : 6 जून 2018

739. ठका गेलौं- शब्द संख्या : 2052, तिथि : 18 जून 2018

740. हारि-जीत- शब्द संख्या : 3190, तिथि : 24 जून 2018

741. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या : 1095, तिथि : 27 जून 2018

742. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या : 1608, तिथि : 01 जुलाई 2018

743. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 5 जुलाई 2018

744. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या : 1584, तिथि : 9 जुलाई 2018

745. केकरो कियो ने- शब्द संख्या : 718, तिथि : 11 जुलाई 2018

746. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या : 1420, तिथि : 13 जुलाई 2018

747. उदय-प्रलय- शब्द संख्या : 1574, तिथि : 15 जुलाई 2018

748. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या : 1458, तिथि : 19 जुलाई 2018

749. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1471, तिथि : 21 जुलाई 2018

750. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या : 2576, तिथि : 31 जुलाई 2018

751. करतब- शब्द संख्या : 2132, तिथि : 04 अगस्त 2018

752. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या : 3068, तिथि : 10 अगस्त 2018

753. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या : 3553, तिथि : 17 अगस्त 2018

754. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या : 2484, तिथि : 22 अगस्त 2018

755. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या : 2291, तिथि : 28 अगस्त 2018

756. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या : 2185, तिथि : 02 सितम्बर 2018

757. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या : 4701, चोरा चान   12 सितम्बर 2018

758. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या : 1805, तिथि : 15 सितम्बर 2018

759. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या : 924, तिथि : 19 सितम्बर 2018

760. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या : 1917, तिथि : 25 सितम्बर 2018

761. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या : 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

762. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या : 1914, तिथि : 30 सितम्बर 2018

763. चटवाह : शब्द संख्या- 2134, तिथि : 4 अक्टूबर 2018

764. भगैतिया- शब्द संख्या : 2177, तिथि : 8 अक्टूबर 2018

765. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या : 2196, तिथि : 12 अक्टूबर 2018

766. यादास्त- शब्द संख्या : 1870, तिथि : 15 अक्टूबर 2018

767. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 19 अक्टूबर 2018

768. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या : 1922, तिथि : 23 अक्टूबर 2018

769. दिवालीक दीप- शब्द संख्या : 2422, तिथि : 29 अक्टूबर 2018

770. हारि केना मानब- शब्द संख्या : 2054, तिथि : 02 नवम्बर 2018

771. अप्पन गाम- शब्द संख्या : 1940, तिथि : 06 नवम्बर 2018

772. परिछन- शब्द संख्या : 2661, तिथि : 11 नवम्बर 2018

773. झूठ सपना- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 15 नवम्बर 2018

774. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या : 2530, तिथि : 19 नवम्बर 2018

775. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या : 2381, तिथि : 24 नवम्बर 2018

776. पुस्तकालय- शब्द संख्या : 2333, तिथि : 29 नवम्बर 2018

777. विचारभेद- शब्द संख्या : 2553, तिथि : 04 दिसम्बर 2018

778. एकरवा बानर- शब्द संख्या : 2793, तिथि : 09 दिसम्बर 2018

779. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या : 2759, तिथि : 14 दिसम्बर 2018

780. रंगमे भंग- शब्द संख्या : 2237, तिथि : 20 दिसम्बर 2018

781. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या : 2590, तिथि : 17 जनवरी 2019

782. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

783. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या : 3473, तिथि : 03 फरवरी 2019

784. फुइसिक रगगड़- शब्द संख्या : 2225, तिथि : 07 फरवरी 2019

785. उखमज- शब्द संख्या : 3964, तिथि : 16 फरवरी 2019

786. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या : 2286, तिथि : 19 फरवरी 2019

787. अगुताइ भेल- शब्द संख्या : 1054, तिथि : 22 फरवरी 2019

788. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या : 965, तिथि : 24 फरवरी 2019

789. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या : 995, तिथि : 25 फरवरी 2019

790. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या : 1051, तिथि : 28 फरवरी 2019

791. चितवनक शिकार- शब्द संख्या : 1071, तिथि : 02 मार्च 2019

792. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या : 1086, तिथि : 04 मार्च 2019

793. धुआ साड़ी- शब्द संख्या : 1132, तिथि : 06 मार्च 2019

794. राजरोग- शब्द संख्या : 1274, तिथि : 10 मार्च 2019

795. संकल्प- शब्द संख्या : 1520, तिथि : 12 मार्च 2019

796. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 1349, तिथि : 15 मार्च 2019

797. काजक मोल- शब्द संख्या : 1090, तिथि : 16 मार्च 2019

798. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या : 1010, तिथि : 19 मार्च 2019

799. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या : 1091, तिथि : 22 मार्च 2019

800. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या : 987, तिथि : 25 मार्च 2019

801. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या : 966, तिथि : 27 मार्च 2019

802. लजगर लोक- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 29 मार्च 2019

803. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या : 1218, तिथि : 02 अप्रैल 2019

804. पगलपन- शब्द संख्या : 1113, तिथि : 04 अप्रैल 2019

805. छलाननक सराध- शब्द संख्या : 996, तिथि : 06 अप्रैल 2019

806. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या : 1402, तिथि : 08 अप्रैल 2019

807. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या : 1463, तिथि : 16 अप्रैल 2019

808. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या : 1530, तिथि : 20 अप्रैल 2019

809. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 22 अप्रैल 2019

810. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या : 1198, तिथि : 25 अप्रैल 2019

811. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019
812. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या : 998, तिथि : 29 अप्रैल 2019
813. सिकिया नेता- शब्द संख्या : 1023, तिथि : मजदूर दिवस, 2019
814. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या : 1475, तिथि : 04 मई 2019
815. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 06 मई 2019
816. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या : 1194, तिथि : 09 मई 2019
817. पुरुखक भर- शब्द संख्या : 1109, तिथि : 12 मई 2019
818. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1411, तिथि : 15 मई 2019
819. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या : 1071, तिथि : 17 मई 2019
820. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या : 1004, तिथि : 19 मई 2019
821. कुभेला- शब्द संख्या : 992, तिथि : 21 मई 2019
822. देखौंस- शब्द संख्या : 945, तिथि : 23 मई 2019
823. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या : 1326, तिथि : 25 मई 2019
824. काजक मेहपन- शब्द संख्या : 947, तिथि : 27 मई 2019
825. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या : 941, तिथि : 29 मई 2019
826. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या : 1553, तिथि : 01 जून 2019
827. काजक धुनि- शब्द संख्या : 1065, तिथि : 03 जून 2019
828. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या : 1618, तिथि : 06 जून 2019
829. अगराही- शब्द संख्या : 944, तिथि : 08 जून 2019
830. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि : 11 जून 2019
831. भौक- शब्द संख्या : 1403, तिथि : 14 जून 2019
832. मनतरक पावर- शब्द संख्या : 1598, तिथि : 17 जून 2019
833. हाल-चाल- शब्द संख्या : 1519, तिथि : 20 जून 2019
834. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या : 1525, तिथि : 23 जून 2019
835. के मानत?- शब्द संख्या : 1721, तिथि : 29 जून 2019
836. दियादीक फेड़- शब्द संख्या : 1412, तिथि : 03 जुलाई 2019
837. वाह रे आदत- शब्द संख्या : 1455, तिथि : 06 जुलाई 2019
838. कटबी सुइद- शब्द संख्या : 1435, तिथि : 09 जुलाई 2019

839. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या : 1948, तिथि : 13 जुलाई 2019

840. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1539, तिथि : 16 जुलाई 2019

841. कलेश- शब्द संख्या : 1509, तिथि : 20 जुलाई 2019

842. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या : 2338, तिथि : 24 जुलाई 2019

843. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या : 2046, तिथि : 28 जुलाई 2019

844. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या : 1856, तिथि : 31 जुलाई 2019

845. भेँट-घाँट- शब्द संख्या : 1884, तिथि : 03 अगस्त 2019

846. कोसा- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 07 अगस्त 2019

847. दहेजक गाए- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 15 अगस्त 2019

848. चलती- शब्द संख्या : 1770, तिथि : 18 अगस्त 2019

849. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या : 1901, तिथि : 21 अगस्त 2019

850. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या : 2198, तिथि : 24 अगस्त 2019

851. अपन करखन्ना- शब्द संख्या : 1704, तिथि : 28 अगस्त 2019

852. लड़कपन- शब्द संख्या : 2150, तिथि : 03 अक्टूबर 2019

853. कुदृष्टि- शब्द संख्या : 2435, तिथि : 08 अक्टूबर 2019

854. हकार- शब्द संख्या : 2012, तिथि : 16 अक्टूबर 2019

855. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या : 2286, तिथि : 25 अक्टूबर 2019

856. दोहरी दहार- शब्द संख्या : 2154, तिथि : 02 नवम्बर 2019

857. पसेनाक मोल- शब्द संख्या : 1748, तिथि : 06 नवम्बर 2019

858. बुढ़ापा- शब्द संख्या : 2122, तिथि : 10 नवम्बर 2019

859. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या : 2092, तिथि : 14 नवम्बर 2019

860. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या : 2416, तिथि : 18 नवम्बर 2019

861. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 22 नवम्बर 2019

862. काजक रोप- शब्द संख्या : 2679, तिथि : 21 दिसम्बर 2019

863. खटसमाद- शब्द संख्या : 2909, तिथि : 27 दिसम्बर 2019

864. जीबठपन- शब्द संख्या : 2577, तिथि : 02 जनवरी 2020

865. गोटी लाल- शब्द संख्या : 2364, तिथि : 06 जनवरी 2020

866. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या : 2361, तिथि : 11 जनवरी 2020

867. दहेज- शब्द संख्या : 2431, तिथि : 15 जनवरी 2020

868. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या : 2630, तिथि : 21 जनवरी 2020

869. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 2660, तिथि : 31 जनवरी 2020

870. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या : 2410, तिथि : 05 फरवरी 2020

871. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या : 2789, तिथि : 10 फरवरी 2020

872. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 16 फरवरी 2020

873. चुटका सुतरल- शब्द संख्या : 2445, तिथि : 21 फरवरी 2020

874. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या : 2255, तिथि : 25 फरवरी 2020

875. अग्नि परीछा- शब्द संख्या : 3097, तिथि : 01 मार्च 2020

876. आसीरवचन- शब्द संख्या : 2564, तिथि : 06 मार्च 2020

877. दहिबरी- शब्द संख्या : 2560, तिथि : 12 मार्च 2020

878. सघन बन- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 17 मार्च 2020

879. हुसैत लोक- शब्द संख्या : 2602, तिथि : 23 मार्च 2020

880. हुसि गेलौं- शब्द संख्या : 2574, तिथि : 28 मार्च 2020

881. झूठक झालि- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 01 अप्रैल 2020

882. दुष्टपन- शब्द संख्या : 2317, तिथि : 06 अप्रैल 2020

883. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 15 अप्रैल 2020

884. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या : 2232, तिथि : 20 अप्रैल 2020

885. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या : 2278, तिथि : 24 अप्रैल 2020

886. लजाउ काज- शब्द संख्या : 2394, तिथि : 02 मई 2020

887. सुचिता- एक : शब्द संख्या : 4352, तिथि : 30 मई 2020

888. सुचिता- दू : शब्द संख्या : 4459, तिथि : 08 जून 2020

889. सुचिता- तीन : शब्द संख्या : 4672, तिथि : 15 जून 2020

890. सुचिता- चारि : शब्द संख्या : 4022, तिथि : 02 जुलाई 2020

891. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या : 2757, तिथि : 08 जुलाई 2020

892. सुचिता- छह : शब्द संख्या : 3188, तिथि : 14 जुलाई 2020

893. सुचिता- सात : शब्द संख्या : 4483, तिथि : 24 जुलाई 2020

894. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 01 अगस्त 2020

895. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या : 2757, तिथि : 06 अगस्त 2020

896. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या : 2711, तिथि : 11 अगस्त 2020

897. अपना जनैत- शब्द संख्या : 2881, तिथि : 16 अगस्त 2020

898. सुदृढ़ जिनगी- शब्द संख्या : 3460, तिथि : 23 अगस्त 2020

898. मुराम जगह- शब्द संख्या : 3575, तिथि : 31 अगस्त 2020

899. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या : 3340, तिथि : 07 सितम्बर 2020

900. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या : 2808, तिथि : 13 सितम्बर 2020

901. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या : 2659, तिथि : 19 सितम्बर 2020

902. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या : 3132, तिथि : 26 सितम्बर 2020

903. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या : 3339, तिथि : 03 अक्टूबर 2020

904. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या : 3199, तिथि : 09 अक्टूबर 2020

905. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या : 2346, तिथि : 15 अक्टूबर 2020

906. जबुरिया कागज- शब्द संख्या : 3366, तिथि : 22 अक्टूबर 2020

907. बेटाक बिआह- शब्द संख्या : 3734, तिथि : 30 अक्टूबर 2020

908. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या : 3325, तिथि : 06 नवम्बर 2020

909. पोसलाक फल- शब्द संख्या : 3039, तिथि : 12 नवम्बर 2020

910. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या : 2933, तिथि : 18 नवम्बर 2020

911. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या : 3038, तिथि : 24 नवम्बर 2020

912. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि : 30 नवम्बर 2020

913. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि : 06 दिसम्बर 2020

914. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या : 3366, तिथि : 12 दिसम्बर 2020

915. घरक खर्च- शब्द संख्या : 3731, तिथि : 19 दिसम्बर 2020

916. समाजक भागे- शब्द संख्या : 3338, तिथि : 25 दिसम्बर 2020

917. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या : 4091, तिथि : 02 जनवरी 2021

918. परिवारक विघटन- शब्द संख्या : 2143, तिथि : 07 जनवरी 2021

919. हारल विचार- शब्द संख्या : 3657, तिथि : 14 जनवरी 2021

920. मोड़पर- एक : शब्द संख्या : 4422, तिथि : 25 जनवरी 2021

921. मोड़पर- दू : शब्द संख्या : 3734, तिथि : 01 फरवरी 2021

922. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या : 3157, तिथि : 08 फरवरी 2021

923. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या : 4844, तिथि : 19 फरवरी 2021

924. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या : 6382, तिथि : 06 मार्च 2021

925. मोड़पर- छह : शब्द संख्या : 2150, तिथि : 10 मार्च 2021

926. मोड़पर- सात : शब्द संख्या : 788, तिथि : 11 मार्च 2021

927. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या : 927, तिथि : 12 मार्च 2021

928. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या : 1127, तिथि : 14 मार्च 2021

929. मोड़पर- दस : शब्द संख्या : 585, तिथि : 15 मार्च 2021

930. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या : 265, तिथि : 16 मार्च 2021

931. संकल्प- एक : शब्द संख्या : 2988, तिथि : 25 मार्च 2021

932. संकल्प- दू : शब्द संख्या : 1903, तिथि : 29 मार्च 2021

933. संकल्प- तीन : शब्द संख्या : 3101, तिथि : 04 अप्रैल 2021

934. संकल्प- चारि : शब्द संख्या : 3197, तिथि : 10 अप्रैल 2021

935. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या : 3202, तिथि : 17 अप्रैल 2021

936. संकल्प- छह : शब्द संख्या : 2026, तिथि : 21 अप्रैल 2021

937. संकल्प- सात : शब्द संख्या : 3139, तिथि : 29 अप्रैल 2021

938. संकल्प- आठ : शब्द संख्या : 2440, तिथि : 04 मई 2021

939. संकल्प- नअ : शब्द संख्या : 2368, तिथि : 08 मई 2021

940. संकल्प- दस : शब्द संख्या : 3977, तिथि : 15 मई 2021

941. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या : 2874, तिथि : 20 मई 2021

942. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या : 6126, तिथि : 04 जून 2021

943. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या : 3669, तिथि : 12 जून 2021

944. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या : 5817, तिथि : 24 जून 2021

945. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या : 4916, तिथि : 04 जुलाई 2021

946. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या : 1881, तिथि : 09 जुलाई 2021

947. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या : 1798, तिथि : 14 जुलाई 2021

948. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या : 1793, तिथि : 17 जुलाई 2021

949. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या : 1671, तिथि : 21 जुलाई 2021

950. देखल गाम- शब्द संख्या : 1737, तिथि : 25 जुलाई 2021

951. अपना ले- शब्द संख्या : 1903, तिथि : 03 अगस्त 2021

952. तीन धक्का- शब्द संख्या : 1759, तिथि : 06 अगस्त 2021

953. अजीब खेल- शब्द संख्या : 2362, तिथि : 20 अगस्त 2021

954. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या : 2798, तिथि : 25 अगस्त 2021

955. केकरो भरोस- शब्द संख्या : 2237, तिथि : 31 अगस्त 2021

956. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या : 1820, तिथि : 04 सितम्बर 2021

957. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या : 2284, तिथि : 15 सितम्बर 2021

958. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या : 2150, तिथि : 23 सितम्बर 2021

959. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या : 1324, तिथि : 29 सितम्बर 2021

960. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या : 4458, तिथि : 10 अक्टूबर 2021

961. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या : 2673, तिथि : 18 अक्टूबर 2021

962. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या : 2852, तिथि : 24 अक्टूबर 2021

963. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या : 1901, तिथि : 18 अक्टूबर 2021

964. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या : 1948, तिथि : 01 नवम्बर 2021

965. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या : 1901, तिथि : 05 नवम्बर 2021

966. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या : 2022, तिथि : 09 नवम्बर 2021

967. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या : 2587, तिथि : 14 नवम्बर 2021

968. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या : 2369, तिथि : 05 दिसम्बर 2021

969. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या : 2191, तिथि : 10 दिसम्बर 2021

970. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या : 2893, तिथि : 16 दिसम्बर 2021

971. घरैया मूस- शब्द संख्या : 2791, तिथि : 22 दिसम्बर 2021

972. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या : 2182, तिथि : 29 दिसम्बर 2021

973. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

974. संचरण- शब्द संख्या : 2477, तिथि : 08 जनवरी 2022

975. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या : 2278, तिथि : 14 जनवरी 2022

976. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या : 2299, तिथि : 21 फरवरी 2022

977. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या : 2859, तिथि : 02 मार्च 2022

978. श्रमहीन- शब्द संख्या : 3105, तिथि : 08 मार्च 2022

979. समुद्रलंघन- शब्द संख्या : 3274, तिथि : 21 मार्च 2022

980. परिवारक भार- शब्द संख्या : 2402, तिथि : 28 मार्च 2022

981. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या : 2347, तिथि : 02 अप्रैल 2022

982. चेहराक निखार- शब्द संख्या : 2496, तिथि : 06 अप्रैल 2022

983. भरि मन काज- शब्द संख्या : 2281, तिथि : 12 अप्रैल 2022

984. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या : 2302, तिथि : 21 अप्रैल 2022

985. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या : 2536, तिथि : 26 अप्रैल 2022

986. घरक बात- शब्द संख्या : 2686, तिथि : 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

987. अप्पन दलान- शब्द संख्या : 2480, तिथि : 06 मई 2022

988. कंजूसपन- शब्द संख्या : 2589, तिथि : 11 मई 2022

989. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या : 1478, तिथि : 15 मई 2022

990. अकारण- शब्द संख्या : 1918, तिथि : 18 मई 2022

991. अछोप- शब्द संख्या : 1590, तिथि : 21 मई 2022

992. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या : 1560, तिथि : 24 मई 2022

993. उनटन- शब्द संख्या : 1581, तिथि : 24 मई 2022

994. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या : 1511, तिथि : 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या : 1538, तिथि : 04 जून 2022

996. पाक मास्टर- शब्द संख्या : 1387, तिथि : 07 जून 2022

997. साइंस टीचर- शब्द संख्या : 1301, तिथि : 10 जून 2022

998. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या : 1367, तिथि : 13 जून 2022

999. निसगर पान- शब्द संख्या : 1346, तिथि : 15 जून 2022

1000. विरोध- शब्द संख्या : 1452, तिथि : 19 जून 2022

1001. जीवन दान- शब्द संख्या : 1405, तिथि : 26 जून 2022

1002. बाग-बगिया- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 30 जून 2022

1003. विश्वास पात्र- शब्द संख्या : 1374, तिथि : 02 जुलाई 2022

1004. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या : 1335, तिथि : 05 जुलाई 2022

1005. लत- शब्द संख्या : 1375, तिथि : 08 जुलाई 2022

1006. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या : 1220, तिथि : 11 जुलाई 2022

1007. कर्ज- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 13 जुलाई 2022

1008. बहादुरी- शब्द संख्या : 1268, तिथि : 16 जुलाई 2022

1009. हमरो खगता छै- शब्द संख्या : 1178, तिथि : 20 जुलाई 2022

1010. सपना- शब्द संख्या : 1241, तिथि : 23 जुलाई 2022

1011. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1012. उवाणि- शब्द संख्या : 1264, तिथि : 29 जुलाई 2022

1013. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या : 1268, तिथि : 01 अगस्त 2022

1014. अपन रचित रचना- शब्द संख्या : 1481, तिथि : 07 अगस्त 2022

1015. थाहल संगी- शब्द संख्या : 1331, तिथि : 10 अगस्त 2022

1016. आत्मबल- शब्द संख्या : 1267, तिथि : 13 अगस्त 2022

1017. विश्वासहीन- शब्द संख्या : 1405, तिथि : 16 अगस्त 2022

1018. बुलन्दी- शब्द संख्या : 1329, तिथि : 19 अगस्त 2022

1019. अप्पन साती- शब्द संख्या : 1287, तिथि : 22 अगस्त 2022

1020. खिच्चड़ि- शब्द संख्या : 1624, तिथि : 26 अगस्त 2022

1021. भंगतराह कवि- शब्द संख्या : 1364, तिथि : 01 सितम्बर 2022

1022. भंगतराह कवि- शब्द संख्या : 1357, तिथि : 01 सितम्बर 2022

1023. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या : 1315, तिथि : शिक्षक दिवस 2022

1024. पुरुखढौह- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 08 सितम्बर 2022

1025. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या : 1232, तिथि : 13 सितम्बर 2022

1026. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1312, तिथि : 16 सितम्बर 2022

1027. परिवारक योग- शब्द संख्या : 1295, तिथि : 19 सितम्बर 2022

1028. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या : 1183, तिथि : 25 सितम्बर 2022

1029. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या : 1141, तिथि : 28 सितम्बर 2022

1030. भाषाक बेथा- शब्द संख्या : 1231, तिथि : 01 अक्टूबर 2022

1031. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या : 1227, तिथि : 05 अक्टूबर 2022

1032. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 08 अक्टूबर 2022

1033. गैंचाह लोक- शब्द संख्या : 1113, तिथि : 11 अक्टूबर 2022

1034. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या : 1258, तिथि : 14 अक्टूबर 2022

1035. अन्तिम आशा- शब्द संख्या : 1365, तिथि : 17 अक्टूबर 2022

1036. गजपट मारि- शब्द संख्या : 1327, तिथि : 20 अक्टूबर 2022

1037. कन्हजोड़- शब्द संख्या : 1346, तिथि : 23 अक्टूबर 2022

1038. अनहोनी- शब्द संख्या : 1308, तिथि : 26 अक्टूबर 2022

1039. होनी- शब्द संख्या : 1236, तिथि : 29 अक्टूबर 2022

1040. भवितव्य- शब्द संख्या : 1130, तिथि : 02 नवम्बर 2022

1041. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या : 1260, तिथि : 05 नवम्बर 2022

1042. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या : 1286, तिथि : 09 नवम्बर 2022

1043. अप्पन मन बुझाएब : शब्द संख्या : 1294, तिथि : 12 नवम्बर 2022

1044. जड़ौर- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 15 नवम्बर 2022

1045. अलोपित- शब्द संख्या : 1360, तिथि : 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 21 नवम्बर 2022

1047. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या : 1289, तिथि : 26 नवम्बर 2022

1048. नब बनक नब फल : शब्द संख्या : 1412, तिथि : 30 नवम्बर 2022

1049. सुमारक : शब्द संख्या : 1246, तिथि : 04 दिसम्बर 2022

1050. अन्तिम भेँट : शब्द संख्या : 1277, तिथि : 08 दिसम्बर 2022

1051. अनहरिया : शब्द संख्या : 1356, तिथि : 12 दिसम्बर 2022

1052. निरन्तर : शब्द संख्या : 3025, तिथि : 21 दिसम्बर 2022

1053. शॉर्टकट रास्ता : शब्द संख्या : 1621, तिथि : 26 दिसम्बर 2022

1054. अपेछा टुटि गेल : शब्द संख्या : 1743, तिथि : 30 दिसम्बर 2022

1055. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या : 1728, तिथि : 05 जनवरी 2023

1056. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या : 3540, तिथि : 14 जनवरी 2023

1057. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या : 3722, तिथि : 25 जनवरी 2023

1058. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या : 1987, तिथि : 30 जनवरी 2023

1059. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या : 3802, तिथि : 06 फरवरी 2023

1060. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या : 1821, तिथि : 10 फरवरी 2023

1061. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या : 925, तिथि : 12 फरवरी 2023

1062. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या : 2999, तिथि : 18 फरवरी 2023

1063. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या : 1926, तिथि : 22 फरवरी 2023

1064. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या : 1953, तिथि : 26 फरवरी 2023

1065. आब नइ जीब : शब्द संख्या : 2097, तिथि : 2 मार्च 2023

1066. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल : शब्द संख्या : 2013, तिथि : 06 मार्च 2023

1067. धुरफन्ना लोक : शब्द संख्या : 1891, तिथि : 10 मार्च 2023

1068. घरदेखी : शब्द संख्या : 1846, तिथि : 14 मार्च 2023



जगदीश प्रसाद मण्डल

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक जन्म: मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे, 5 जुलाई 1947 इस्वीमे भेलैन। शिक्षा: एम.ए. द्वय (हिन्दी,राजनीति शास्त्र), जीविकोपार्जन: कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती), रूचि: 2001 तक समाज सेवा, रूढ़ि एवम् सामन्ती व्यवहारक खिलाफ लड़ाइ, केस-मोकदमा, जहल यात्रा। 2001 इस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्षेत्रमे आगमन। नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि– साहित्यक मौलिक विधामे साएसँ ऊपर पोथीक लेखन-प्रकाशन। सम्मान/पुरस्कार 'विदेह सम्मान- 2011', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', 'वैदेह सम्मान- 2012', 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2014', 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', 'कौमुदी सम्मान- 2017', 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2017', 'स्व. बाबू साहेव चौधरी सम्मान-2018', 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021', 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार-2022', 'यात्री सम्मान- 2022' तथा 'शिखर सम्मान- 2022' सँ सम्मानित। **रचना-संसार:** 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा, 38. सुनयना बेटी- उपन्यास। 39. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 40. कल्याणी, 41. सतमाए, 42. समझौता, 43. तामक तमघैल, 44. बीरांगना- एकांकी। 45. तरेगन, 46. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 47. शंभुदास, 48. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 49. गामक जिनगी, 50. अर्द्धांगिनी, 51. सतभैंया पोखैर, 52. गामक शकल-सूरत, 53. अपन मन अपन धन, 54. समरथाइक भूत, 55. अप्पन-बीरान, 56. बाल गोपाल, 57. भकमोड़, 58. उलबा चाउर, 59. पतझाड़, 60. गढ़ैनगर हाथ, 61. लजबिजी, 62. उकडू समय, 63. मधुमाछी, 64. पसेनाक धरम, 65. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 66. फलहार, 67. खसैत गाछ, 68. एगच्छा आमक गाछ, 69. शुभचिन्तक, 70. गाछपर सँ खसला, 71. डभियाएल गाम, 72. गुलेती दास, 73. मुड़ियाएल घर, 74. बीरांगना, 75. स्मृति शेष, 76. बेटीक पैरुख, 77. क्रान्तियोग, 78. त्रिकालदर्शी, 79. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 80. दोहरी हाक, 81. सुभिमानी जिनगी, 82. देखल दिन, 83. गपक पियाहुल लोक, 84. दिवालीक दीप, 85. अप्पन गाम, 86. खिलतोड़ भूमि, 87. चितवनक शिकार, 88. चौरस खेतक चौरस उपज, 89. समयसँ पहिने चेत किसान, 90. भौक, 91. गामक आशा टुटि गेल, 92. पसेनाक मोल, 93. कृषियोग, 94. हारल चेहरा जीतल रूप, 95. रहै जोकर परिवार, 96. कर्ताक रंग कर्मक संग, 97. गामक सूरत बदैल गेल, 98. अन्तिम परीक्षा, 99. घरक खर्च, 100. नीक ठकान ठकेलौं, 101. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 102. संचरण, 103. भरि मन काज, 104. आएल आशा चलि गेल, 105. जीवन दान, 106. अप्पन साती, 107. साहित्यकारक विवेक तथा 108. नब बनक नब फल, 109. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- लघु कथा संग्रह।

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

मूल्य : ₹ 250/-

ISBN: 978-93-93135-38-4

9789393135384

सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन